फुलवाड़ी

भाग-5

पाँचम कक्षाक मैथिली-भाषाक पाठ्य पुस्तक

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कार्पोरेशन लिमिटेड, पटना द्वारा प्रकाशित ।

दिशा-बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राजेश भूषण,** राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना ।
- **श्री हसन वारिस**, निदेशक, एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना ।
- **श्री राम शरणागत सिंह,** संयुक्त निदेशक सह विशेष कार्यक्रम पदाधिकारी, बी. एस. टी. बी. पी. सी. लि०, पटना ।
- **श्री रामसागर सिंह**, कार्यक्रम पदाधिकारी, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना ।
- **श्री अजित कुमार**, सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, बिहार, पटना ।
- **डॉ० सैयद अब्दुल मोइन**, विभागाध्यक्ष, एस. सी. ई. आर. टी., पटना ।
- **डॉ० श्वेता सांडिल्य,** शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना ।
- **डॉ० ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, प्राचार्य, टी. आई. एच. एस., पटना ।

✦✦✦

लेखक सदस्य

1. **डॉ० अरुण कुमार झा, 'व्याख्याता',**
   राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   पटना सिटी, पटना-7
2. **डॉ० राज कुमार झा, 'व्याख्याता',**
   राजकीय बालक उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   पटना सिटी, पटना-8
3. **श्री कृष्णदेव झा**
   'स. शि.', उ0 म0 विद्यालय, सहोड़ा,
   हायाघाट, दरभंगा ।
4. **डॉ० उपेन्द्र कुमार,**
   'सहायक शिक्षक'
   +2 उच्च विद्यालय, जयनगर, मधुबनी ।

समीक्षक

1. **डॉ० लेखनाथ मिश्र**, 'पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष', मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।
2. **डॉ० इन्द्रकान्त झा**, 'पूर्व विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अध्यक्ष', मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक

- **डॉ० अर्चना**, व्याख्याता, एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना ।

आभार : यूनिसेफ बिहार

शब्द संयोजन : सृष्टि ऑफसेट प्रिंटर्स, अशोक राजपथ, पटना

आमुख

कोनो व्यक्ति द्वारा प्रयुक्त भाषासँ ओकर व्यक्तित्वक समग्र मूल्यांकन कयल जा सकैत छैक । प्रस्तुत पुस्तक एकटा एहने प्रयास थिक जाहिसँ विद्यार्थी अपन बौद्धिक, चारित्रिक आ वैचारिक विकास कऽ सकताह। विद्यार्थीकेँ ध्यानमे राखि उत्कृष्ट, उपयोगी आ उद्देश्यपरक पाठ सामग्रीक सामावेश कयल गेल अछि। प्रस्तुत पोथी राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूप रेखा 2006 क आलोकमे विकसित नवीन पाठ्यक्रम 2007 क आधार पर बनाओल गेल अछि ।

पुस्तक निर्माणक प्रक्रियामे बिहार राज्यक सभ्यता, संस्कृति, स्थान, परिवेश तथा बच्चाक आयुवर्गकेँ ध्यानमे राखि कविता, लेख, कथा आ प्रेरक प्रसंगकेँ संगृहीत कयल गेल अछि, जे विद्यार्थीकेँ चहुँमुखी विकासमे सहायक सिद्ध होयत । भाषा शिक्षणक विविध आयाम, शुद्ध उच्चारण, सृजनात्मकता, वैयाकरणिक शुद्धता, भाषामे प्रवाह आ प्रभावोत्पादकताक विशेष ध्यान राखल गेल अछि ।

प्रस्तुत पुस्तकमे छः गोट गद्य आ छः गोट पद्य पाठक समावेश कयल गेल अछि । अंतमे एक गोट पद्य आ एक गोट गद्यक समावेश मात्र पढ़बाक लेल कयल गेल अछि ।

गद्य-पाठमे 'गंगानाथ झा' पाठक चयन कयल गेल अछि । एहि जीवनीक द्वारा बच्चा सभकेँ ओकरा एहि महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वसँ परिचय कराय अपन जन्मभूमि आ समाजक प्रति गौरव बोध जगयबाक एकटा छोट प्रयत्न कयल गेल अछि ।

हास्य कथा 'मधुर सत्यक' उद्देश्य बच्चाकेँ स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करबाक संग-संग मधुर सत्य बजबाक कला सिखायब अछि ।

विचारात्मक निबंध 'घोषन्त विद्या लपटन्त जोर' क माध्यमे बच्चाकेँ कोनो कार्यक धैर्यपूर्वक निरंतर अभ्यास करबाक हेतु प्रेरित करब अछि । तँ दोसर दिस आधुनिक कालमे खेलकूदक महत्त्वकेँ सेहो स्थापित करबाक प्रयास कयल गेल अछि । तात्पर्य ई जे खेलाड़ीक रूपमे सेहो बच्चा समाजमे प्रतिष्ठित भऽ सकैत अछि ।

आजुक युगमे कम्प्यूटर हमरा जीवनक अनिवार्य अंग थिक तँ बच्चाकेँ कम्प्यूटरसँ परिचय

करायब उचिते छैक ।

'सिनेहिया' कथाक माध्यमसँ बच्चामे विभिन्न प्रकारक समस्याक बीच शिक्षा प्राप्तिक अदम्य इच्छाकेँ जीवित रखबाक हेतु प्रेरित करब अछि ।

पद्य-भागमे अपन परम्पराक पोषण आ वर्धन हेतु 'कर्त्तव्याकर्त्तव्य' क चयन भेल अछि तँ दोसर दिस नीति परक पद सेहो देल गेल अछि, जाहिसँ बच्चाक चारित्रिक उन्नयन हो । देश एवं अपन समाजक प्रति श्रद्धा एवं समर्पण जगयबाक लेल क्रमशः 'स्वदेश' एवं 'भारत-भवानी' कविताक समावेश कयल गेल अछि । संगहि स्वस्थ एवं सबल राष्ट्रक भावना युक्त कविता 'पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो' केँ स्थान सेहो देल गेल अछि । अन्तमे मिथिलाक प्राकृतिक विपदासँ परिचय करयबाक लेल 'बाढ़ि' कविताक चयन कयल गेल अछि ।

एकर अतिरिक्त बच्चाक भाषायी क्षमताक विकास हेतु विभिन्न लिखित एवं मौखिक प्रश्नक समावेश कयल गेल अछि । ''अनुमान एवं कल्पना'' आ योग्यता विस्तारक अन्तर्गत भाषायी पाठसँ हटि बच्चाकेँ स्वतंत्र रूपसँ भाषाक प्रति चिन्तन करबाक अवसर देबाक प्रयास कयल गेल अछि । अन्तमे शिक्षक बन्धुक सहायतार्थ अध्यापन-संकेत सेहो देल गेल अछि ।

आशा अछि जे ई पुस्तक बच्चाक हेतु उपयोगी सिद्ध होयत ।

पाठ्य पुस्तक हेतु पाठक चयनसँ लऽ कऽ ओकर प्रकाशन धरि बहुशः त्रुटि भऽ सकैत छैक । तेँ शिक्षक, पाठक एवं समीक्षक लोकनिसँ पुस्तकक सम्बन्धमे सुझाव अपेक्षित, जाहिसँ भविष्यमे ओकर परिमार्जन भऽ सकय ।

निदेशक

विषय सूची

क्रमांक	पाठ		रचनाकार	पृष्ठ सं०
1.	''कर्त्तव्याकर्त्तव्य'' (पद्य)	-	सीताराम झा	01–03
2.	मधुर सत्य (गद्य)	-	हरिमोहन झा	04–09
3.	''स्वदेश'' (पद्य)	-	सुरेन्द्र झा 'सुमन'	10–13
4.	म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा (गद्य)	-	ताराकान्त मिश्र	14–22
5.	''पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो'' (पद्य)	-	भीमनाथ झा	23–27
6.	घोषन्त विद्या लपटन्त जोर (गद्य)	-	रामदेव झा	28–34
7.	''भारत-भवानी (पद्य)	-	कमलाकान्त झा	35–38
8.	खेल कूदक महत्त्व (गद्य)	-	उपेन्द्र दोषी	39–45
9.	''नीति-पद'' (पद्य)	-	उदय चन्द्र झा 'विनोद'	46–48
10.	सिनेहिया (गद्य)	-	प्रदीप बिहारी	49–57
11.	''बाढ़ि'' (पद्य)	-	तारानन्द वियोगी	58–61
12.	कम्प्यूटर (गद्य)	-	अभिषेक	62–67

मात्र बढ़बाक लेल

13.	''चल चल दइया मिथिला चल'' (पद्य)	-	महाकान्त ठाकुर	68–68
14.	बिलाड़िक काटल बाट (गद्य)	-	ऋषि वशिष्ठ	69–71

✦✦✦

1. कर्त्तव्याकर्त्तव्य

मातृ देवो भव, पितृ देवो भव आ राम-लक्ष्मणादिक भ्रातृ स्नेहक आदर्श परम्पराकेँ सकल संसारमे सभ क्यो जनैत छथि । जे एहि मार्गसँ भटकैत छथि, से चाहे कतबो शक्तिमान आ गुणवान किएक ने रहथु हुनकर जीवन नरक समान भऽ जाइत छनि । तेँ मनुष्यकेँ अपन कर्त्तव्याकर्त्तव्य (कर्त्तव्य+अकर्त्तव्य) पर ध्यान देव अति आवश्यक अछि । कवि एहि आदर्श आ प्रेरणादायक परम्पराक दृष्टान्त अपन कवितामे बहुत सुन्दर ढ़ँगसँ देलनि अछि ।

भाइक संग विरोध सँ होइछ कुफल नितान्त ।
ई पुरान-इतिहास मे अछि प्रसिद्ध दृष्टान्त ।।
अछि प्रसिद्ध दृष्टान्त बालि रावन आ कौरव ।
बन्धु विरोधे नष्ट भेल तीनूक गुन-गौरव ।।
तेँ नहि तादृश करी काज वाचिक आ कायिक ।
जाहि सँ किछुओ कतहु ने अनादर हो निज भाइक ।।

माता सम निरपेक्ष हित नहि त्रिभुवन मे आन ।
तेँ सबहिक कर्त्तव्य थिक सदा अम्ब सनमान ।।
मानसहित जे मातृवचन जन कान धरै छथि ।
से जगमे चिरजीवि सकल सुख भोग करै छथि ।।
जननिक हृदय उदार नेहमय रचल विधाता ।
देखल सुनल कुपुत्र बहुत नहि कतहु कुमाता ।।

बापक हरि अधिकार जे करय हुनक अपमान ।
होइछ तकर विनाश ई अछि विख्यात प्रमाण ।।
अछि विख्यात प्रमाण एक द्वापर मे कंसक ।
कलि मे औरंगजेब भेल दोसर विध्वंसक ।।
गनले दिन मे सठल दूनू पौलक फल पापक ।
तेँ घर केँ बरू तजी निरादर करी न बापक ।।

-कविवर सीताराम झा

शब्दार्थः

नितान्त	-	परम, अत्यन्त, बहुत बेसी आवश्यक
दृष्टान्त	-	उदाहरण
तादृश	-	तकरा समान
वाचिक	-	बाजबसँ सम्बन्धित
कायिक	-	शरीरसँ सम्बन्धित
निरपेक्ष	-	पक्षपात रहित
अम्ब	-	माता

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) माइक संग झगड़ा कयला पर ककर सभक गुण आ गौरव नष्ट भय गेलैक ?

(2) माइक प्रति हमरा सभक की कर्त्तव्य अछि ?

(3) मायक वचनक पालनसँ की फल भेटैत छैक ?

(ख) **निम्नलिखित प्रश्नक उत्तर दिअः**

(1) भाइक संग झगड़ा कयलासँ केहन फल भेटैत छैक ?

(2) मायक वचनकेँ की करबाक चाही ?

(3) अपन संतानक हेतु मायक मनमे केहन विचार रहैत छैक ?

(4) पिताक अपमान कयलासँ ककरा सन फल भेटैत छैक ?

(ग) **निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखूः**

कुफल, विरोध, आदर, निरपेक्ष, कर्त्तव्य,
चिरजीवी, उदार, कुपुत्र, विख्यात, अपमान ।

भाषा-अध्ययन:

(1) (i) एहन शब्द जे देल गेल शब्दक आरंभमे लागि ओकर अर्थ बदलि दैत छैक, उपसर्ग कहबैत अछि । अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्, वि, निर्, परा, परि, प्र, प्रति, वि, सम्, सु, कु, अ, अन्, दुः, स- उपसर्ग थिक ।

जेना- कु + पुत्र = कुपुत्र, सु + पुत्र = सुपुत्र ।

(ii) नीचा देल गेल शब्दमे उपयुक्त उपसर्ग जोड़ि नव शब्द बनाउ आ ओकर अर्थ लिखू ।

फल, सम, जन, मान, माता,
ख्यात, ज्ञान, कार, अर्थ ।

(2) नीचाँ देल गेल खाना मे किछु वर्ण देल गेल अछि, ताहिसँ शब्दक निर्माण करू ।
जेना - अपमान

ओ	ज	ग	र
सु	प	थ	स
र	क	मा	ता
ज	द	ला	न
क	म	ल	व

योग्यता-विस्तार:

(1) पाठमे देल गेल नीति-पद अथवा एहने आन पदकेँ वर्गकक्षक देबाल पर सुन्दर-अक्षरमे लीखि ओकरा सजाउ । यदि से नहि हो तँ कार्ड-बोर्ड पर लीखि कऽ टाँगू ।

(2) जँ अहाँक टोल-पड़ोसमे केओ एहन व्यक्ति होथि जनिकर सब प्रशंसा करैत होइनि, हुनका संबंधमे जानकारी एकट्ठा करू ।

अध्यापन-संकेत:

(1) शिक्षक-लोकनि वर्गमे बच्चा सभकेँ बालि, रावण, कौरव, कंस आदिक पतनक कथा सुनाबथि ।

(2) भाषा-अध्ययनमे उपसर्गक चर्चा भेल अछि । शिक्षक लोकनिसँ निवेदन जे ओ बच्चाकेँ एकर प्रचुर-अभ्यास कराबथि ।

✦✦✦

2. मधुर सत्य

प्रिय बाजब, सत्य बाजब मनुष्यक आभूषण थिक । प्रिय एवं सत्य बजनिहारकेँ आदर, सम्मान आ बड़प्पन प्राप्त होइत छनि । हुनकामे पात्रता अबैत छनि, ओ सभक प्रिय पात्र भऽ जाइत छथि मुदा अप्रिय सत्य बाजब नीक बात नहि । एहिसँ गञ्जने टा होइत छैक जेना पूर्वमे सत्यदेवकेँ भेलनि । एहि पाठमे हास्य-विनोदक माध्यमे विद्यार्थीकेँ मधुर आ प्रिय सत्य बजबाक प्रेरणा देल गेल अछि ।

सत्यदेवक शिक्षा सम्पन्न भेलनि । गुरू अन्तिम दीक्षा देलथिन- 'सत्यं वद' । सत्यदेव गुरुसँ दीक्षा लऽ कऽ प्रसन्न चित्त घर बिदा भेलाह ।

घर पहुँचितहि सत्यदेव देखलनि जे दरबज्जापर पाहुन छथि । पाहुन पुछलथिन-कहू, प्रसन्न छी ?

सत्यदेव कहलथिन-यथार्थ कहू की फूसि ?

पाहुन कहलथिन-यथार्थ कहू ।

सत्यदेव कहलथिन-तखन सुनि लिअऽ, पहिने प्रसन्न छलहुँ । आब अहाँकेँ देखि कऽ सन्न छी । अहाँक भोजनक हेतु नाना प्रकारक सामग्री जुटबऽ पड़त । दूध चाही, दही चाही, घृत चाही, मधुर चाही, अँचार चाही, सँचार चाही । अहाँ तँ चौकीपर पड़ल रहब आ हमरा बारह ठाम दौड़ बरहा करऽ पड़त । ओरिआओन करैत-करैत बारह बाजि जायत । तखन अहाँ कयल-धयल पर जय जगन्नाथ करब, एखन आबि कऽ अहाँ भारी दुख देलहुँ अछि ।

पाहुन क्षुब्ध होइत पुछलथिन-तखन अहाँक की विचार जे हम फीरि कऽ चल जाइ ?

सत्यदेव निर्विकार भावसँ कहलथिन- हँ, से तँ नीक होइत । अहाँ चल जाइ तँ एकटा ग्रह टरि जाय ।

पाहुन हुनका 'धरकट' आदि विशेषणसँ विभूषित करैत बिदा भऽ गेलाह । थोड़ेक कालक बाद सत्यदेवक माय आबि कऽ पुछारी कयलथिन - हौ मामा कतऽ गेलथुन ?

सत्यदेवक मुँहसँ सभटा बात सुनि ओ माथ-कपार पीटऽ लगलीह ।

गाममे पण्डितजीक ओहिठाम कन्यादान भेल रहनि । पण्डिताइन जमाय देखबाक हेतु

सत्यदेवकेँ लऽ गेलथिन । पुछलथिन-की औ बाबू ! वर पसिन्न पड़लाह ? धुम्मुह छथि । हिनक हाफ्फुसन मुँह देखि कऽ मन होइ अछि जे एक थापड़ लगा दियनि । आशीर्वाद देनहि की हेतनि, यदि मरबाक हेतनि तँ मरबे करताह । और ई पहिने मुइलाह तँ कन्या विधवा हेबे करतीह । तखन हम फुसिए कोना कहि दियौक जे सर्वदा सधवे रहतीह ?

एतबा सुनितहि आङनसँ 'अलच्छा', 'जरलाहा' आदि शब्दक वर्षा होबऽ लागल ।

फेकू बाबूक मृत्यु पर शोक सभा छल । स्वर्गीय आत्माक गुणाख्यान होइत छल । सत्यदेव ओहिठाम पहुँचि कऽ बाजऽ लगलाह-फेकू बाबू बहुत वृद्ध, अकार्यक भऽ गेल छलाह । अपन क्रिया-कर्म पर्यन्त नहि कऽ होइत छलनि । हुनका जिउने आब ककरो उपकार नहि होइतैक । नीक भेलनि जे मरि गेलाह। आब घरोवला सभकेँ उसास हेतनि। तखन फेकूबाबू स्वर्ग गेलाह कि नरक गेलाह से के कहि सकैत अछि ?

हुनक भाषण समाप्तो ने भेल छलनि कि फेकू बाबूक समाङ सब मार-मार कऽ हुनका दिस छुटल । सत्यदेव पड़यलाह । भागल-भागल गुरुदेवक शरणमे पहुँचलाह । कहलथिन-गुरो ! अपनेक देल शिक्षासँ हमरा कतहु वास नहि होयत । आब अपन उपदेश आपस लेल जाओ ।

गुरुकेँ सभ वृत्तान्त सत्येदव सुना देलथिन । गुरु सुनि कऽ कहलथिन-अहाँ लठ्ठमार सत्य बजैत छी । तैँ सब ठाम दुर्जरू बनैत छी । कोमल सत्य बाजू । ओलसन कबकब नहि, पंचामृत सन मधुर ।

सत्यदेव पुछलथिन-से कोना ?

गुरु कहलथिन-देखू एकटा राजा स्वप्न देखलनि । एकटा अहीं सन ज्योतिषी रहथि, से फल कहलथिन-'हे राजा ! अहाँक समस्त कुल परिवारक लोक एक-एक कऽ, मरि जायत और अन्तमे अहूँ मरि जायब ।' राजा हुनका हाथीक नाङड़िमे बन्हबा देलथिन-तखन दोसर ज्योतिषी बजाओल गेलाह ओ वाक् चतुर रहथि। कहलथिन-श्रीमान् ! अत्यन्त शुभस्वप्न थिक । एकर फल ई जे अपने समस्त कुल परिवारमे सबसँ अधिक दीर्घजीबी होयब । ई सुनितहि राजा प्रसन्न भऽ हुनका पुरस्कार दऽ विदा कयलथिन । बात दुहु एक्के । परन्तु एक गोटे कटु सत्य बजलाह, दोसर प्रिय सत्य बजलाह । अतएव नीतिक वचन छैक-'सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यम्अप्रियम्' । अर्थात् सत्य बजबाक चाही प्रिय बजबाक चाही, अप्रिय सत्य नहि बजबाक चाही ।

यदि साँच (पकवान) मे गुड़ नहि पड़त तँ ओ साँच कोन काजक ? तहिना प्रत्येक सत्य प्रिय होयबाक चाही ।

ओहि दिनसँ सत्यदेव मधुरे सत्य बाजऽ लगलाह और प्रिय सत्यदेव बनि गेलाह ।

-हरिमोहन झा

शब्दार्थ:

फूसि	-	झूठ
सन्न	-	अवाक्, क्षुब्ध
ओरिआओन	-	तैयारी करब, व्यवस्था करब
निर्विकार	-	विकार रहित
गुणाख्यान	-	गुणक वर्णन
उसास	-	भारसँ हल्लुक
समाड.	-	भाइ, बन्धु
दीर्घजीवी	-	अधिक दिन धरि जीबऽबला ।

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) सत्यदेव समाजमे दुर्जरु होइत छलाह तँ पुनः पड़ा कऽ कतऽ गेलाह ?

(2) सत्यदेवक वृत्तान्त सुनि गुरूजी सत्यदेवकेँ की कहलथिन ?

(3) सत्यदेव, प्रिय सत्यदेव कोना बनलाह ?

(4) राजा ज्योतिषीकेँ हाथीक नाङड़िमे किएक बन्हबा देलथिन ?

(5) दोसर ज्योतिषी कोन कारणेँ राजासँ पुरस्कार प्राप्त कयलनि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) गुरू सत्यदेवकेँ अन्तिम दीक्षा की देलथिन ?

(2) सत्यदेवक सत्य वचन सुनि जे पाहुन हुनका दरबजासँ विदा भऽ चलि गेलाह से सत्यदेवक के छलाह ?

(3) सत्यदेव फेकू बाबूक मृत्यु पर की बजलाह ?

(4) सत्यदेवक वचन सुनि फेकू बाबूक समाङ हुनका संग केहन व्यवहार कयलथिन ?

(5) सत्यदेव समाजमे दुर्जरु होइत छलाह तकर की कारण ?

(6) 'सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम्' एहि उक्तिक आशय लिखू।

(ग) **सही-गलतीः**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) पण्डितजीक जमायकेँ देखि सत्यदेव खूब शुभाशीर्वाद देलथिन ? ☐

(2) सत्यदेवक बात सुनि पण्डितजीक आङनमे खूब स्वागत भेलनि। ☐

(3) फेकू बाबूक मृत्यु पर शोक सभामे सत्यदेव बजलाह-फेकू बाबू बहुत वृद्ध आ अकार्यक भऽ गेल छलाह। ☐

(4) सत्यदेव गुरुजीसँ कहलथिन–अपनेक देल शिक्षासँ हमरा कतहुँ बास नहि होयत । ☐

(5) गुरु-सत्यदेवकेँ पंचामृत सन मधुर बजबाक लेल कहलथिन । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) कयल घयल पर .... करब ।

(2) .... तखन अहाँक की विचार .... हम फिरिकऽ चल जाइ ?

(3) पाहुन हुनका .... आदि विशेषणसँ विभूषित करैत विदा भऽ गेलाह ।

(4) सत्यदेव .... सभटा बात सुनि ओ .... पीटऽ लगलीह ।

(5) फेकू बाबूक मृत्यु पर .... सभा छल ।

(ङ.) **नीचाँ देल गेल शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

पाहुन, क्षुब्ध, प्रसन्न, सन्न, दुर्जरू, स्वर्ग ।

(च) **नीचाँ देल गेल शब्दकेँ शुद्ध करू:**

निरविकार, भाशन, वृतान्त, दुरजरू, ज्योतषी ।

भाषा अध्ययन:

(1) संज्ञा आ सर्वनामक विशेषता बतौनिहार शब्द विशेषण कहबैछ । जेना- धरकट अही आधार पर पाठमे आयल विशेषण शब्दकेँ ताकि ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

(2) जाबत हम अबैत छी ताबत अहाँ लिखना लिखू ।
हम अबैत छी तोँ वर्गमे जाह ।

उपर्युक्त वाक्यमे 'हम' उत्तम पुरूष सर्वनाम थिक आ 'अहाँ एवं तोँ' मध्यम पुरूष सर्वनाम थिक । बजनिहार उत्तम पुरूष सर्वनाम कहबैत अछि जेना-'हम आओर सुननिहार अर्थात् जिनका किछु कहल जाइत हो से मध्यमपुरूष सर्वनाम कहबैत अछि जेना- तोँ, तोरालोकनि, अहाँ ।

अही आधार पर मध्यम पुरूषवाचक सर्वनामकेँ चुनि कऽ लिखू आ ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

योग्यता विस्तारः

मधुर सत्यसँ सम्बद्ध कोनो कथा सुनल वा पढ़ल हो तऽ ओकरा लिखू आ कक्षामे सुनाउ ।

अध्यापन संकेतः

शिक्षकसँ अपेक्षा जे वर्गमे विद्यार्थीकेँ मधुर सत्यसँ संबद्ध कथा लिखबाक हेतु मार्गदर्शन करथि ।

✦✦✦

3. स्वदेश

प्रस्तुत कविता 'मातृभक्ति' (स्वदेश भक्ति) क भावसँ पूर्ण अछि । एहि कविताक रचयिता मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार सुरेन्द्र झा 'सुमन' छथि । कवि अपन देश तिरहुतक गौरवपूर्ण स्थितिक वर्णन सम्यक् ढ़ँगसँ कयलनि अछि । एकर सोन्हगर माटि, मीठगर पानि, शुद्ध आ शीतल हवा, मधुर भाषा, धन-धान्यसँ सम्पन्न क्षेत्र तिरहुत (मिथिला) कविकेँ अत्यन्त प्रिय लगैत छनि । एहन सुसंस्कृत देश (मिथिला) मे जन्म लेलासँ कवि अपनाकेँ धन्य बुझैत छथि ।

तिरहुति हमरा सभ क स्वदेश ।
जनम लेल हम जनिक उदेश ।।
उठी न कखनहुँ प्यासें कानि,
कूप कूप भरि राखथि पानि ।
हमरा लै जोगबै छथि अन्न
बाध-बोन आँचर मे बान्हि ।।
माय हमर छथि तिरहुति देश ।
जकर कोर सपनहु न कलेश ।।
जकर माटि माखन सँ मीठ ।
जकर पानि लग दूधो ढीठ ।
मलय, वायुसँ भरल बसात
पुष्ट भेल छी जनिकहि दीठ ।।
सीखल भाषा, सीटल वेश ।
जतय, हमर से जयतु स्वदेश ।।
कोमल भाषा भूषा वेश ।
सभसँ सुन्दर मिथिला देश ।।

-सुरेन्द्र झा 'समुन'

शब्दार्थ:

तिरहुति	-	मिथिला क्षेत्र
उदेश	-	लक्ष्य
कूप	-	इनार
बाध-बोन	-	खेत-पथार
कलेश	-	दु:ख
बसात	-	हवा
दीठ	-	दृष्टि
कोर	-	कोरा
मलय-वायु	-	दक्षिण दिशासँ चलल हवा (जे मुख्यत: वसन्त ऋतुमे बहैत अछि ।)

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार:

(क) **मौखिक प्रश्न:**

कहू तऽ-

(1) अहाँक स्वदेशक की नाम थिक ?

(2) कवि एहि कवितामे माय ककरा कहलनि अछि ?

(3) एहिठाम कूपक सम्बन्धमे कवि की कहलनि अछि ?

(4) कवि ककरा कोरामे क्लेशक अनुभव नहि करैत छथि ?

(5) तिरहुतिक दोसर नाम की थिक ? ई कोन राज्यमे अछि ?

(ख) **लिखित प्रश्न:**

(1) तिरहुतक माटि-पानिक सम्बन्धमे कवि की कहैत छथि ?

(2) मिथिलाक बसात कथीसँ भरल अछि ?

(3) एहिठामक भाषा केहन अछि ?

(4) कवि मिथिलाकेँ सभसँ सुन्दर देश किएक कहलनि अछि ?

(ग) **रिक्त स्थानकेँ पूरा करू:**

जनम लेल हम जनिक ....
उठी न .... प्यासेँ पानि
हमरा लै जोगबै छथि ....
माय हमर छथि तिरहुति ....
सभसँ सुन्दर मिथिला .... ।

(घ) **निम्नांकित पाँतीक भाव स्पष्ट करू:**

(1) मलय वायुसँ भरल बसात
पुष्ट भेल छी जनिकहि दीठ ।

(2) कोमल भाषा भूषा वेश
सभसँ सुन्दर मिथिला देश ।

(ङ) **निम्नांकित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

स्वदेश, कूप, पानि, अन्न, बाध-बोन,
पुष्ट, कोमल, सुन्दर, भाषा ।

(च) **निम्नांकित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू:**

स्वदेश, जनम, पानि, माय, क्लेश,
कोमल, सुन्दर ।

भाषा अध्ययन:

(1) प्रस्तुत पाठमे भाषा संज्ञा शब्दक संग कोमल आओर 'मिथिला' संज्ञा शब्दक संग सुन्दर विशेषणक प्रयोग भेल अछि । एहि दूनू संज्ञा शब्दक संग आओर दू-दू टा विशेषणक प्रयोग करू ।

(2) कखनहुँ-कखनहुँ दू शब्द जोड़ा लगाए बाजल जाइत अछि । एहन शब्द शब्दयुग्म कहबैत अछि । जेना- बाध-बोन, बाल-बच्चा आदि । एहन दश गोट शब्दयुग्मकेँ लिखू ।

योग्यता-विस्तारः

(क) 'मिथिला' क विशेषता सभक खोज करू आ ओकर सुची बनाउ ।

(ख) अहाँक मातृभाषा मैथिली बिहारक कोन-कोन जिलामे बाजल जाइत अछि, तकर सूची बनाउ ।

अध्यापन-संकेतः

शिक्षकलोकनिसँ निवेदन जे ओ बच्चाकेँ मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहासक जानकारी देथि, जाहिसँ ओकरामे अपन जन्मभूमि आ देशक प्रति गर्वक बोध हो ।

✦✦✦

4. महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झा

प्रस्तुत पाठ ताराकान्त मिश्र द्वारा लिखल गेल अछि । एहि पाठ मे डा० सर गंगानाथ झाक महान व्यक्तित्व आ कृतित्वक चर्चा कयल गेल अछि । डॉ० झा अद्वितीय क्षमतावला व्यक्ति छलाह । अपन कुशाग्रता, सूचीबद्ध दिनचर्या, विद्वता आ विभिन्न महत्त्वपूर्ण पदकेँ सुशोभित कयनिहारमे डॉ० झाक खूब ख्याति छलनि । ओ एकटा छोट हिमालय सदृश छलाह । स्वस्थ शरीरमे बड़प्पनक सभ गुण सँ सम्पन्न । निष्ठावान, लगनशील, कठिन परिश्रमी, दृढ़ संकल्पक संग-संग महान साधक सेहो छलाह । राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय विभिन्न उपाधि आ सम्मानसँ सम्मानित छलाह । प्रयाग विश्वविद्यालयक प्रथम निर्वाचित कुलपति छलाह । प्राय: ई प्रथम व्यक्ति छलाह जे स्वेच्छासँ एहि पदकेँ छोड़ि देलनि ।

पंडित गंगा नाथ झा मिथिलाक विद्वत् मणिमालाक एक गोट जगमगाइत रत्न छथि । ओ दड़िभंगा जिलाक सरिसव पाहीटोल गामक निवासी छलाह । मुदा हुनक जन्म अपन मातृक गन्धवारि गाममे सन 1871 ई. मे भेल छलनि । हिनक पिताक नाम श्री तीर्थनाथ झा छलनि। मातृक पक्षसँ गंगानाथ बाबू दड़िभंगा राज परिवारसँ सम्बन्धित रहथि ।

बाल्यकालहिंसँ ई बड़ तीव्र बुद्धि रहथि आर एहन मान्यता छैक जे आजीवन हिनका दिगभ्रम नहि भेलनि । जहिना ई प्रतिभाशाली रहथि तहिना बालहिं अवस्थासँ शरीरसँ सेहो ह्रस्ट-पुष्ट । जखन ई मात्र सात वर्षक रहथि, राजकुमार लक्ष्मीश्वर सिंह हिनका गन्धवारिसँ दड़िभंगा लऽ गेलथिन आर ओ दड़िभंगेमे रहि अपन शिक्षा प्रारंभ कएलनि; दड़िभंगामे रहि ओ राज स्कूलसँ ई 1886 ई. मे इन्ट्रैन्स पास कएलनि तथा अग्रिम शिक्षा हेतु काशी जाय क्वीन्स कालेजमे प्रवेश लेलनि । समग्र शिक्षा अवधिमे हिनका दड़िभंगा राज परिवारसँ शिक्षण व्यय भेटइत रहलनि ।

गंगानाथ झा इन्ट्रेन्स परीक्षा तृतीय श्रेणीमे पास भेल रहथि; मुदा कालेजमे प्रवेश पवितहिं हिनकर प्रतिभा जागि उठल । प्रथमहिं वर्षक फाइनल परीक्षामे ई समस्त युक्त प्रान्तमे सर्व प्रथम भऽ गेलाह ।

वर्ष 1888 ई. मे ओ इन्टरमीडियट परीक्षा देल आर ओहि परीक्षामे सेहो सम्पूर्ण संयुक्त

प्रदेशमे सर्वप्रथम भऽ गेलाह । 1890 ई. मे बी. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान प्राप्त कएल तथा दर्शन शास्त्र' मे आनर्स सेहो भेटलनि । ताहि समयमे सम्पूर्ण संयुक्त प्रान्तक कोनो कॉलेजमे एम. ए. संस्कृतक पठन-पाठनक व्यवस्था नहि छलइक । गंगानाथ बाबूकेँ संस्कृत पढ़बाक तीव्र इच्छा छलनि । से, ओ प्राइवेट रूपसँ संस्कृत अध्ययन करऽ लगलाह । काशीएमे रहि मिथिलाक पंडित लोकनिसँ संस्कृत पढ़ऽ लगलाह जिनका लोकनिमे सभसँ प्रख्यात महामहोपाध्याय पं० जयदेव मिश्र छलाह । वर्ष 1892 ई. मे ओ एम. ए. मे परीक्षा देल तथा द्वितीय श्रेणीमे प्रथम स्थानक संग विश्वविद्यालयमे प्रथम स्थान पओने रहथि । जखन ई बी. ए. मे पढ़ैत रहथि मैथिली भाषाक यशस्वी कवि ओ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सभारत्न महामहोपाध्याय पंडित हर्षनाथ झाक जेठ कन्या 'इन्दुमती' सँ हिनक विवाह भेलनि ।

एम. ए. पास कएलाक बादो गंगानाथ झा काशीमे रहि स्वाध्यायरत भए संस्कृत साहित्यक अध्ययन करइत रहलाह। ताहि युगमे काशीक सभसँ पैघ प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वान् लोकनिमे पं० जयदेव मिश्र, पंडित शिवकुमार मिश्र, पंडित गंगाधर शास्त्री तथा पंडित कैलाश शिरोमणि भट्टाचार्य रहथि । गंगानाथ बाबू इएह चारू विद्वान् प्रवरसँ संस्कृत पढ़इत छलाह । मुदा पारिवारिक असुविधासँ हिनका दड़िभंगा वापस आबए पड़लनि। दड़िभंगामे महाराजलक्ष्मीश्वर सिंह हिनका अपन राज पुस्तकालयक पुस्तकालयाध्यक्षक पदपर नियुक्त कए लेलखिन । दरिभंगा राजपुस्तकालयकेँ गंगा बाबू खूब सुसंगठित कए सजाओल, अपन उत्साह, श्रम तथा महाराज साहेबक आर्थिक सहयोगसँ राज पुस्तकालयकेँ देशक गनल-चुनल पुस्तकालय सभमे स्थान देआओल ।

एक तऽ पढ़बाक उचाट, दोसर समृद्ध पुस्तकालयक वातावरण तेसर मिथिला मध्य दड़िभंगामे रहने, हिनका संस्कृत अध्ययन दिस उत्कंठा बढ़िते गेलनि । ताहि समय दड़िभंगा राजक प्रधान पंडित महामहोपाध्याय पंडित चित्रधर मिश्र छलाह । हुनकासँ गंगानाथ झा 'मीमांसा' शास्त्रक कठिनसँ कठिन प्रश्न सब पढ़ि गेलाह । दू वर्ष धरि ई नित्य प्रातः काल तीन घंटा हुनकासँ पढ़ल करथि ।

विद्यार्थीए जीवनसँ ई बड़ दृढ़ प्रतिज्ञ एवं अध्यवसायी रहथि । ई जखन काशीमे पढ़इत रहथि, संकल्प कएने छलाह प्रतिदिन जे किछु संस्कृतमे पढ़ी ओही दिन अंग्रेजीमे ओकरा लीखि ली । एहि संकल्प निर्वाहमे ई जखन एम. ए. क परीक्षा हेतु पढ़इत छलाह तखनहि 'काव्य प्रकाश'

तथा 'सांख्य तत्त्व कौमुदी' सदृश्य कठिन ग्रन्थक अंग्रेजी अनुवाद कए लेने रहथि । दड़िभंगा अएलहुँपर ई क्रम बरोबरि चलैत रहलनि । जखन धरि ओ अपन एहि संकल्पकेँ पूरा नहि कए लेथि ओ चैन नहि लेथि ।

म्योर सेन्ट्रल कालेज प्रयागमे संस्कृतक अध्यापकक रूपमे हिनक नियुक्ति सन 1902 ई. मे भेलनि आर ओ 22 नवम्बर 1902 केँ ओहि पदपर काज करब प्रारंभ कऽ देलनि । ताहि समय म्योर सेन्ट्रल कालेजक प्रिंसपल डॉ० थीबो रहथि । डॉ० थीबो भारतीय न्याय दर्शनक बड़ पैघ विद्वान् भेने गंगानाथ बाबूक विद्वतासँ प्रभावित रहथि । से, डॉ० थीबोक सहयोगसँ गंगानाथ झा वर्ष 1907 ई. मे एक टा 'त्रैमासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारंभ कएलनि जकर नाम "Indian Thought" छलैक ! एहि पत्रिकामे बेराबेरी अनेक अतिक्लिष्ट संस्कृत दार्शनिक ग्रन्थक अग्रेजीमे अनुवाद कए गंगानाथ झा प्रकाशित कएने रहथि ।

प्रो० गंगानाथ झा ''पूर्व मीमांसामे प्रभाकरक सिद्धान्त'' ग्रन्थक अग्रेजीमे भावार्थ लीखि प्रकाशित कएलनि । एहि ग्रन्थ लिखबाक पुरस्कारमे प्रयाग विश्वविद्यालय हिनका वर्ष 1909 ई. मे ''डी० लिट्'' (डाक्टर आफ लेटर्स) क विशिष्ट उपाधिसँ विभूषित कएने छल । एक दू मास पश्चात् 1 जनवरी 1910 ई. केँ भारत सरकार दिसिसँ प्रो० गंगानाथ झा जीकेँ ''जखन ओ मात्र उन्चालिस वर्षक रहथि-महामहोपाध्यायक अतिविशिष्ट सम्मानप्रद उपाधिसँ अलंकृत कएल गेल ।

महामहोपाध्याय डा० गंगानाथ झा सोलह वर्ष धरि म्योर सेन्ट्रल कालेजमे संस्कृतक अध्यापन करइत रहलाह । तकरा बाद वर्ष 1918 ई. मे काशीक गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेजक प्रिन्सिपल नियुक्त भेल रहथि। डा. झा पहिल भारतीय रहथि जे एहि कालेजक प्रिन्सिपल नियुक्त भेल रहथि । हिनकासँ पहिने एहि कालेजमे जे प्रिन्सिपल भेलाह, सभ विदेशीए । जहिया संस्कृत कालेजक प्रिन्सिपल रहथि, ओ भारत सरकार द्वारा प्रथम काउन्सिल आफ स्टेट'' क सदस्य मनोनित कएल गेल छलाह । वर्ष 1923 ई. धरि, ओ, ओकर सम्मानित सदस्य रहलाह । एही बीच प्रयाग विश्वविद्यालयक पुनर्संगठन भेलइक । नवीन प्रणालीक तहत कुलपतिक नियुक्ति निर्वाचनसँ होयबाक निश्चय कएल गेल छलइक, डा० गंगानाथ झा एहि विश्वविद्यालयक प्रथम कुलपति निर्वाचित भेल छलाह । एहि नव दायित्वकेँ उचित पालन हेतु ओ ''काउन्सिल'' क सदस्यतासँ इस्तिफा दय देलनि । एहि वाइस चान्सलरक पदपर ओ तीन खेप लगातार निर्वाचित होइत रहलाह,

नौ वर्ष धरि कार्यरत छलाह । हिनक कार्य अवधिमे प्रयाग विश्वविद्यालय हिनका "आनरेरी एल. एल. डी." क सम्मानप्रद उपाधिसँ अलंकृत कएने छल । वर्ष 1932 ई. क नवम्बर मासमे हिनक पत्नी स्वर्ग सिधारि गेलीह । आ झा साहेब चारिम वेर भाइस चान्सलर पदक हेतु ठाढ़ नहि भेलाह । वाइस चान्सलरक पद छोड़नहुँ डा० गंगानाथ झा आजीवन युनिभर्सीटीक एक्सक्युटिव कमीटीक सदस्य बनल रहलाह ।

डा० गंगानाथ झा ग्रेट ब्रिटेनक रायल एशियाटिक सोसाइटीक आनरेरी सदस्य रहथि तथा बम्बईक एशियाटिक सोसाइटी हिनका अपन "केम्पवेल मेडल" प्रदान कए सम्मानित कएने छलनि । वर्ष 1914 ई. मे भारतक सम्राटक जन्म दिनक उपलक्ष्य मे पैघ-प्रतिष्ठित लोकनिकेँ उपाधि वितरण कएल गेल छलइक जाहि मे डा० झाकेँ "नाइट" क विशेष उपाधिसँ विभूषित कएल गेल । ई उपाधि वैदुष्य ख्याति हेतु देल जाइत छलइक । पांडित्यक हेतु महामहोपाध्याय तथा विशुद्ध वैदुष्य ख्यातिक हेतु "नाइटहुड" दूहू उपाधिकेँ पओनिहार विश्व इतिहासमे मात्र मिथिलाक ई. सपूत डा० गंगानाथ झा छथि ।

महामहोपाध्याय डा० सर गंगानाथ झाक मृत्यु वर्ष 1941 ई. मे 19 नवम्बरक रातिमे तीर्थ राज प्रयागमे भेलनि । हिनक ज्ञान मृत्यु भेल छल । पद्मासन लगौने जप करइत, अत्यन्त शांत चित्तसँ भारत माताक मुकूट मणि ई पुरूष पुङ्गव एहि नश्वर शरीरकेँ त्यागने रहथि ।

डा० गंगानाथ झाकेँ पाँच पुत्र तथा एक पुत्री छलथिन । पुत्र मध्य-भवनाथ झा; अमर नाथ झा; शिवनाथ झा, विभूति नाथ झा तथा आदित्य नाथ झा । सभक सभ पुत्र सुयोग्य, विद्वान् रहइत उच्च पदपर आसीन भेलनि । सरिपों डा. गंगानाथ झा बड़ भाग्यशाली पिता रहथि ।

डा० झाक सफलता ओ उन्नतिक साधन हिनक अप्रतिम कार्यक्षमता एवं दृढ़ संकल्प छल । जाहि काजमे हाथ लगौलहुँ, ओकरा सम्पन्न कइए कए छोड़ब । जे काज आइ करबा थिक, अथवा जे कए सकइत छी तकरा टारब, हिनका अबितेहि नहि छलनि । आलस्यक तऽ हिनकामे गन्धो नहिं छल । बहुत मेथोडिकल रहथि ।

पढ़ब-लिखब दिन चर्या भऽ गेल छलनि । ओ साठिसँ बेसी पुस्तक लिखलाह जाहिमे अधिकांश संस्कृत वाङ्मयक अग्रेजी अनुवाद छल । एतेक रास पोथी लिखबाक संगहि भारी-सँ-भारी दायित्व पूर्ण काज, जाहि सफलतासँ सम्पादित करइत रहलाह से हुनका प्राप्त राष्ट्रीय तथा

अन्तर्राष्ट्रीय उपाधि, अलंकार आ पदक वैशिष्ट्यसँ प्रमाणित होइत अछि । एतेक पुस्तक लिखबा लेल कतेको ग्रन्थ पढ़बाक भेल हैतनि, कतेको संभ्रांत लोकनिसँ भेंट करबाक भेल हैतनि कतेको ठाम जयबाक भेल हैतनि-आर एहि सभक संग ओतेक गंभीर दायित्वपूर्ण कार्य-ओहि प्रवीणतासँ करइत रहलाह एना क्यो अलौकिक क्षमता सम्पन्न व्यक्तिए कए सकैछ । सामान्य लोकक लेल संभव नहि बूझना जाइछ ।

शरीरसँ सेहो झा साहेब खूब स्वस्थ रहथि । पिंडश्याम रंग तेजोमय मुख मंडल । छोट खुट्टी, गुलचा-मुलचा आकर्षक व्यक्तित्व । सहज वेषभूषा, अवसर अनुकूल । हिनक शरीरक ऋषि तुल्य कान्ति छोड़ि आर कोनो वस्तुसँ हिनक विशिष्टताक बोध नहि होइक । कोनो व्यसन नहि, कोनो कुटेब नहि । संयत स्वाध्यायी ।

हिनक गप्प-सप्प सरस हास्य-विनोदक पुटक संग होइत छल; चन्द्रमाक किरण सन पांडित्य झलकइत । मुदा काजक वेर कोनो अप्रासंगिक गप नहि; अपितु भाव-भंगी किंचित् रूक्षहि रहइत छलनि । परिवारक नेना-भुटकासँ विनोदी गप्प करब हुनक स्वभाव छलनि भारतीय मान्यतामे डा० गंगानाथ झा एकटा 'ब्राह्मण' छलाह; निर्भीक, विद्यानुरागी, आस्थावादी, आस्तिक ।

डा० झा समस्त उपनिषद्‌कें मथि गेल रहथि; सभ दर्शन शास्त्रक तत्त्वक विवेचना कए आत्मसात कएने छलाह । ब्रह्म मुहूर्तमे जागि, 'ब्राह्मणोचित' सकल नित्य क्रियासँ निपटब; हुनक दैनिक जीवन भऽ गेल छल । गायत्री मंत्रक सहस्त्र जाप ई नित्य करथि । हिनक स्मरण क्षमता तथा मेधा लोकोत्तर शक्ति सम्पन्न छल । अपन विहित काजक प्रति योगी जकाँ ध्यानस्थ भऽ जाथि । लगमे लोक गप्प-सप्प करइत होथि तऽ धन्नसन; चारू दिसि धीआ-पूता घोल मचएने होय, कोनो बात नहि; गंगा नाथ बाबू पद्मासन लगौने कठिनसँ कठिन पुस्तक लिखबामे मगन । साधक, सिद्ध, सुजान !

-ताराकान्त मिश्र

शब्दार्थ:

आजीवन	-	जीवन भरि
दिग्भ्रम	-	भटकनाइ
व्यय	-	खर्च
संकल्प	-	निश्चय, प्रतिज्ञा
उत्कंठा	-	तीव्र इच्छा
त्रैमासिक	-	तीन मासक
मासिक	-	प्रत्येक मासक
पाक्षिक	-	पन्द्रह दिनक
साप्ताहिक	-	सात दिनक
क्लिष्ट	-	भारी, कठिन
इस्तिफा	-	त्यागपत्र, छोड़ि देब
वैदुष्य	-	विद्वता
पुङ्गव	-	श्रेष्ठ
नश्वर	-	नाशवान
सरिपों	-	वास्तवमे, निश्चित रूपसँ, सत्य
अप्रतिम	-	अतुलनीय
वाङ्मय	-	साहित्य, भाषा
व्यसन	-	आदति
आस्तिक	-	ईश्वरमे विश्वास राखएबला
घोल	-	हल्ला

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) डॉ० सर गंगानाथ झा द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका कोन ई. मे प्रकाशित भेल आ ओकर नाम की छल ?

(2) काशीक गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेजक प्रिंसिपलक पदपर हिनक नियुक्ति कहिया भेल ?

(3) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा प्रयाग विश्वविद्यालयक कुलपतिक रूपमे कय बेरि निर्वाचित भेल रहथि ?

(4) डॉ० सर गंगानाथ झाक निधन कहिया भेलनि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) महा महोपाध्याय डॉ० सर गंगानाथ झाक जन्म कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(2) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा काशीमे किनकासँ संस्कृत पढ़ैत छलाह ?

(3) महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह द्वारा ई कोन पद पर नियुक्त भेलाह ?

(4) डॉ० गंगानाथ झा किनका द्वारा आ कोन-कोन उपाधिसँ सम्मानित भेल छलाह ?

(5) संस्कृतक अध्यापकक रूपमे हिनक नियुक्ति कहिया आ कतऽ भेलनि ?

(6) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा पर एक अनुच्छेद लिखू ।

(ग) **सही गलतीः**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) म० म० डॉ० सर गंगानाथ झा बच्चहिसँ कुशाग्र बुद्धिक लोक छलाह । ☐

(2) डॉ० गंगानाथ झा इन्ट्रेन्स परीक्षा प्रथम श्रेणी मे पास भेल रहथि । ☐

(3) डॉ० गंगानाथ झाकेँ संस्कृत पढ़बाक इच्छा नहि छलनि । ☐

(4) डॉ० गंगानाथ झाक पत्नीक नाम इन्दुमती छलनि । ☐

(5) डॉ० गंगानाथ झा आजीवन युनिवर्सीटीक एक्सक्युटिव कमीटीक सदस्य बनल रहलाह । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्ति करू:**

(1) डॉ० सर गंगानाथ झा ग्रेट ब्रिटेनक रायल एशियाटिक .... सदस्य रहथि ।

(2) बम्बईक एशियाटिक सोसाइटी डॉ० सर गंगानाथ झाकेँ .... मेडल प्रदान कय सम्मानित कयने छल ।

(3) डॉ० सर गंगानाथ झाक निधन ....ई. मे 19 नवम्बरक रातिमे तीर्थराज .... मे भेलनि ।

(4) डॉ० गंगानाथ झा .... सँ बेसी पुस्तक लिखलाह ।

(5) डॉ० गंगानाथ झा समस्त .... केँ मथि गेल रहथि ।

(ङ.) **निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू-**

परिक्षा, सम्पुर्न, सभारतन, स्वध्याय, अध्यन, परिश्रमिक, माहाराज ।

(च) **निम्नलिखित शब्दक विलोम शब्द लिखू:**

जन्म, दिन, पंडित, जेठ, देश, देशज ।

(छ) **निम्नलिखित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

डॉ० सर गंगानाथ झा, उपाधि, उचाट,
पुस्तकालयाध्यक्ष, अध्यापक, पुरस्कार ।

(ज) **समानार्थी शब्दक मिलान करू:**

'क'	'ख'
(1) प्रथम	(i) पोथी
(2) सालाना	(ii) कठिन
(3) क्लिष्ट	(iii) पहाड़
(4) ग्रन्थ	(iv) वार्षिक
(5) पर्वत	(v) पहिल

भाषा अध्ययन:

(1) शारीरिक वा मानसिक व्यापार क्रिया कहबैत अछि, जेना- पढ़ब, लिखब, बुझब । पाठमे आयल क्रिया शब्दकेँ चुनिकऽ लिखू ।

(2) निम्नलिखित खारामे पाँच विद्वान्क नाम देल गेल अछि । प्रत्येक वर्णकेँ ताकि ओकरा सही क्रममे लिखू जाहिसँ कोनो तीन विद्वान्क नाम स्पष्ट हो-

वा	मि		या		ति
च		मि		ण्ड	झा
म	अ		श्र		श्र
		वि		श्र	ति
ध्या			चि		च
स्प	न	मि	प	न्दा	

(1)

(2)

(3)

◆◆◆

5. पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो

प्रस्तुत पद्यमे कवि देशमे शान्ति, समानता, वैचारिक शुद्धता, आर्थिक सम्पन्नता आ मानव कल्याणक हेतु सभक उत्थान सहित राष्ट्रकेँ रामराजक रूपमे विकसित होयबाक कल्पना कयलनि अछि । एहि आशाक सन्देश दैत कवि सर्व जन हिताय सर्व जन सुखायक कामना कयलनि अछि ।

देश शान्त हो
क्यो न क्लान्त हो
प्रान्त-प्रान्तमे सम विचार हो ।
सभ पवित्र हो
शुभ चरित्र हो
मित्रताक उन्मुक्त द्वार हो ।।
हृदय शुद्ध हो
मन न क्रुद्ध हो
ककरो गति नहि कतहु रुद्ध हो ।
आत्मज्ञान हो
सभक ध्यान हो
परिश्रमक नहि फल विरुद्ध हो ।।
जलक वृष्टि हो
धवल दृष्टि हो
कृषक हेतु नित नवल सृष्टि हो ।
पूर्ण अन्न हो
सभ प्रसन्न हो
देशक सुन्दरतम अदृष्टि हो ।।
अरि निराश हो
ओकर नाश हो
विश्वक रिपुता सर्वग्रास हो ।

श्रीक बास हो
ज्योति-लास हो
मानव-मुख पर मुक्त हास हो ।।
एक साज हो
एक बाज हो
सभक अधर पर एक गान हो ।
सभ सुकाज हो
रामराज हो
क्यो नहि ककरो हेतु आन हो ।।
हाहि बन्द हो
वायु मन्द हो
घूसक झंझावात नाश हो ।
राग दूर हो
द्वेष चूर हो
सभ तरि मलयानिलक वास हो ।।
'वाद' बाद हो
नहि विवाद हो
दूर एतऽ सँ अर्थतन्त्र हो ।
क्यो न नृपति हो
सभक सुगति हो
सर्वोदय जन-जनक मन्त्र हो ।।
क्यो न त्रस्त हो
कार्यव्यस्त हो
नव निर्माणक पथ प्रशस्त हो ।
अगति ध्वस्त हो
वस्तु सस्त हो
पुनि-पुनि ई पन्द्रह अगस्त हो ।।

-भीमनाथ झा

शब्दार्थः

कलान्त	–	मलिन
उन्मुक्त	–	खुजल बन्धनहीन
रुद्ध	–	बाधित
वृष्टि	–	वर्षा
धवल	–	साफ
नवल	–	नव
अदृष्टि	–	भाग्य
अरि	–	शत्रु
रिपुता	–	शत्रुता
हास	–	हँसी
अधर	–	ठोर
लास	–	नाच

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ–

(1) कवि देशमे कथीक स्थापना चाहैत छथि ?

(2) कवि परिश्रमक केहन फल चाहैत छथि ?

(3) एहि कवितामे कवि ककर नाश चाहैत छथि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

एहि प्रश्नक उत्तर लिखू-

(1) कविक मनमे कृषकक लेल केहन कामना छनि ?

(2) 'सभक अधर पर एक गान हो' एहि पाँतीकेँ स्पष्ट करू ।

(3) प्रस्तुत कवितामे कवि केहन देश चाहैत छथि ?

अनुमान आ कल्पनाः

नीचाँ देल गेल कविताक किछु पाँती छूटल अछि । पाँती गढ़ि कऽ खाली स्थानकेँ पूरा करू-

पानि आयल बुन्नी आयल ।
.... ॥
छाता ओढ़ने मुन्नी आयल ।
.... ॥

भाषा अध्ययनः

(1) नीचाँ देल गेल शब्दसँ तुक मिलबैत आनो शब्द लिखू-

जेना - शान्त -	कलान्त	कान्त	उपरान्त	एकान्त
पवित्र -	चरित्र	....	....	....
अन्न -	प्रशान्न	....	....	....
साज -	बाज	....	....	....

(2) नीचाँ देल गेल शब्दक पर्यायवाची (समान अर्थ बाला) शब्द लिखू-

परिश्रम, कृषक, अरि, मुख, विश्व ।

(3) एहि शब्दकेँ शुद्ध कय लिखू-

देस, सान्त, विद्यान, पबित्र, नबल, निरास ।

योग्यता विस्तार:

(1) संगी, शिक्षक आदिसँ विचारि 'हमर विद्यालय केहन हो', शीर्षकक एकटा विवरण तैयार करू ।

अध्यापन संकेत:

शिक्षक लोकनिसँ निवेदन जे एहि कविताक शिक्षणक प्रारम्भ पूर्णत: बालकेंद्रित विधिसँ करथि । सर्वप्रथम ओ बच्चेसँ मनतव्य लेथि जे हमर देश केहन हो ? तत्पश्चात् कविताक व्याख्यामे प्राचीन ओ नवीन उदाहरणक प्रचुर उपयोग करथि ।

✦✦✦

6. घोषन्त विद्या लपटन्त जोर

प्रस्तुत पाठ घोषन्त विद्या लपटन्त जोर एक विचारात्मक निबंध थिक । एकर लेखक विद्वान् प्रोफेसर आ प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. रामदेव झा छथि । प्रस्तुत पाठमे लेखक अभ्यासक फल कोना लाभकारी होइत अछि ताहि पर बल देलनि अछि । अभ्याससँ बिगड़लो बात कोना बनि जाइत अछि तकर रोचक उदाहरण दऽ विद्यार्थीकेँ प्रेरित करबाक विचार प्रस्तुत कयलनि अछि ।

एकटा प्रसिद्ध कहबी अछि 'घोषन्त विद्या लपटन्त जोर' नहि किछु तँ थोड़बो थोड़ ।' ई कहबी समाजक चिरकालक सामूहिक अनुभवक सूत्र रूपमे सारभूत निष्कर्ष थिक । यदि कोनो विषयक बेर-बेर आवृत्ति कयल जाय तँ किछु ने किछु विद्या हासिल होयबे करत । तहिना नित्य दिन किछु-किछु व्यायाम कयल जाय तँ ओहिसँ शारीरिक शक्तिमे वृद्धि होयबे करत । ई तँ भेल एहि कहबीक तात्पर्य । परन्तु एहूसँ बेसी गम्भीर वस्तु दिस एकर संकेत अछि, ओ थिक अभ्यास, निरन्तर अभ्यास । कोनो काजकेँ बेर-बेर करैत रहब अभ्यास थिक । मनुष्य जे किछु जनैत अछि, जे किछु सिखैत अछि, जे किछु कऽ सकैत अछि; तकरा मूलमे निहित रहैत छैक निरन्तर अभ्यास । कोनो विद्या, कोनो कला, अथवा आने कोनो विशिष्ट प्रकारक कार्यमे प्रतिभा ओ ज्ञानक स्थान महत्त्वपूर्ण रहैत छैक, परन्तु ओ तावत धरि सार्थक नहि भऽ सकत, फलप्रद नहि भऽ सकत, जीवनोपयोगी नहि भऽ सकत, जावत धरि ओहिमे अभ्यासक संयोग नहि कयल जायत ।

संस्कृत अध्यापनक क्षेत्रमे एकटा उक्ति विशेष रूपसँ प्रचलित अछि जे–'पक्षे वैयाकरणा:' । अर्थात् पन्द्रह दिन धरि वैयाकरण लोकनि पढ़ल पाठक आवृत्ति नहि करथि तँ हुनका व्याकरण शास्त्र बिसरि जयतनि । ई बात आनहु शास्त्र ओ विद्याक सम्बन्धमे चरितार्थ होइत अछि ।

अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ जीवनक समस्त गति-विधिकेँ उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि । कमार काठ पर रंग-विरंगक खोधामा पाड़ि दैत अछि । एहन कारीगरी ओ कोनो पोथीसँ नहि पढ़ने रहैत अछि; ई ओकर कौलिक ज्ञान रहैत छैक । परन्तु ओकर कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा आत्मसात् कऽ लैत अछि । मालि सब कतरनीसँ कोढ़िलाकेँ कतरि-कतरि कऽ कागत सन पातर पत्र तैयार कऽ लैत

अछि । फूलक केसर सन मेही-मेही टुकड़ी बना कऽ ओहिसँ रंग-विरंगी आकारक फूल, फूदना, मोर तैयार कऽ लैत अछि । हाथक एहन कारीगरी आ सफाइ ओकरा अभ्याससँ प्राप्त होइत छैक । अभ्यासक एहन-एहन कतोक उदाहरण देल जा सकैत अछि ।

ई तँ भेल परम्परासँ प्राप्त ज्ञानक सम्बन्धमे । मुदा सामान्यो व्यावहारिक जीवनमे अभ्यासक महत्त्व देखल जा सकैत अछि । साइकिल तँ लोक खूब चढ़ैत अछि । दू पहियाक साइकिल ओना ठाढ़ नहि रहि सकैत अछि । परन्तु वैह साइकिल नीक जकाँ चलैत अछि सवारक नियंत्रण पर । मुदा साइकिल पर चढ़बाक लेल लोककेँ पहिने अभ्यास करऽ पड़ैत छैक । जकरा बुतेँ अभ्यास नहि कयल होइत छैक, से साइकिलपर कहियो ने चढ़ि पबैत अछि ।

अनेक व्यक्तिक अक्षर ततेक सुन्दर, सोझ, सुडौल होइत छनि जे लगैत छैक जेना छापाक अक्षर हो । अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन प्रसन्न भऽ जाइत छनि । परीक्षामे बहुतो परीक्षार्थी उत्तर अल्पो लीखि अपन नीक हस्तलेखक बलपर परीक्षकसँ नीक अंक पाबि लैत अछि। दोसर दिस बहुतो व्यक्तिक हस्तलेख कौआक टाङ सन टेढ़-मेढ़ होइत छनि । कतोक व्यक्तिक अक्षर तँ तेहन होइत छनि जे अनका सोझाँ लिखैत लाज होबऽ लगैत छनि । हम एकटा एहन नीक लोककेँ जनैत छियनि जे भेंट भेला पर बड़ सौजन्य देखबैत छथि शिष्ट व्यवहार, आत्मीयता ओ शालीनतासँ मन मोहि लैत छथि परन्तु दूर भेला पर ने अपना दिससँ पत्र लिखैत छथि, ने पत्रक उत्तर दैत छथि । एकर कारण की, से बहुत दिन धरि रहस्य बनल रहल । बहुत बादमे ई भेद फूजल जे हुनक अक्षर बड़ अधलाह होइत छनि, जाहि संकोचेँ ओ ककरो पत्र नहि लिखैत छथिन । अनेक व्यक्तिक लेख तँ एहन भूताक्षर भेटत जे लेखक स्वयं अपन लिखल अपने पढ़ि सकताह ताहिमे सन्देह । महात्मा गान्धीक सेहो अक्षर नीक नहि होइत छलनि जाहि लय हुनका आजीवन कचोट होइत रहलनि । तेँ बच्चा सबकेँ आरम्भेसँ लिखना लिखाओल जाइत छैक । लिखना थिक सुलेख बनयबाक निरन्तर अभ्यास ।

अभ्यासमे जे चूकि जाइत छथि, तनिका जीवनमे हीनता बोधक पीड़ा सहऽ पड़ैत छनि । सहै पड़तनि ! परन्तु एहि पीड़ासँ उबरि सकैत छथि यदि ओ अविलम्ब इच्छित दिशामे अभ्यास आरम्भ कऽ देथि । अभ्यास आरम्भ करबामे अबेर जे होउक मुदा बेर नहि बीतल रहैत छैक । अभ्यास

द्वारा बिगड़लो बातकेँ बनाओल जा सकैछ । जीवनक दिशा बदलल जा सकैत अछि ।

ऊपर नीक आ अधलाह अक्षरक चर्चा भेल अछि । एही प्रसंगक एकटा और घटना हमरा देखल अछि । से देखि कऽ विश्वास करऽ पड़त जे प्रौढ़ो वयसमे यदि निरन्तर अभ्यास कयल जाय तँ अधलाहसँ अधलाह अक्षरकेँ सुधारल जा सकैत अछि । एकटा परिचित प्राध्यापक छथि; नीक, प्रतिष्ठित । अपना विषयक विद्वत्तामे प्रसिद्धि छनि । परन्तु छात्रावस्थामे वर्गमे हुनक बड़ दयनीय स्थिति रहैत छलनि । प्रतिभाशाली होइतो परीक्षामे जे किछु लिखैत छलाह, से परीक्षक पढ़ि नहि पबैत छलथिन । परिणाम स्वरूप बड़ सामान्य अंक भेटैत छलनि । साल भरि जे छात्र वर्गमे सर्वोत्तम प्रतिभाक प्रदर्शन करैत छल, सैह परीक्षा-फलक दृष्टिएँ अति सामान्य छात्र सिद्ध होइत छल । प्रवेशिका परीक्षाक छओ मास पूर्व एकटा शिक्षक एक दिन हुनक कापीकेँ तमसा कऽ चिर्री-चोथ कऽ फाड़ि कऽ फेकि देलथिन आ कहलथिन– 'हओ बाउ ! तोँ नीक प्रथम श्रेणीक विद्यार्थी छह अवश्य मुदा अपन भूताक्षरक कारण अगिला परीक्षामे अवश्य फेल करबह । ई हमर ब्रह्मवाक्य छह ।' ई बात हुनका लागि गेलनि । ओही दिनसँ ओ अपन हस्तलेखकेँ सुलेख बनयबा केर नियमित अभ्यास करऽ लागि गेलाह । परीक्षाक समय अबैत-अबैत ततबा सुधार भऽ गेलनि जे प्रवेशिका परीक्षामे सत्तरि प्रतिशत अंक प्राप्त कयलनि । प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाह। आ आब तँ हुनक पाण्डुलिपि प्रेसो इत्यादिमे आदर्श मानल जाइत छनि । छात्र लोकनि हुनक अक्षरक अनुकरण करबाक चेष्टा करैत छथिन । वस्तुतः अपन अभ्यासक बलपर गुरुजीक ब्रह्मवाक्यकेँ अन्यथा सिद्ध कऽ देलनि । जँ विलम्बोसँ अभ्यास आरम्भ नहि कयने रहितथि तँ संभव छल जे हुनक परीक्षाफल निम्नकोटिक होइतनि आ तखन हुनक भावी जीवन, जेहन एखन छनि, से नहि भऽ पबितनि । तेँ कहल जे अभ्यासक बेर बीतल नहि रहैत छैक ।

अभ्यासक सुपरिणामक एहन-एहन हजारो उदाहरण समाजमे देखल जा सकैत अछि । वास्तवमे, प्रत्येक व्यक्तिमे कोनो ने कोनो प्रकारक विशिष्ट क्षमता होइत छैक । परन्तु ओ क्षमता निष्क्रिय भऽ कऽ समाप्त भऽ जाइत छैक। एकर कारण थिक अभ्यासक अभाव । यदि ओहि क्षमताकेँ नियमित रूपसँ अभ्यासक संयोग भेटैक तँ ओ क्षमता चमकि उठैत छैक, अन्यथा क्रमशः क्षीण होइत-होइत नष्ट भऽ जाइत छैक । विशिष्ट काज करबाक वैयक्तिक विशेषताकेँ

प्रतिभा कहल जाइत छैक । प्रतिभाकेँ निश्चिते रूपसँ अभ्यास चाही । हीराक सौन्दर्य तखने झलकैत छैक जखन ओकरा खराजल जाइत छैक । हीरा कतबो मूल्यवान् होअओ मुदा अनगढ़ हीराकेँ के गरदनिमे लटकाबऽ चाहत ? किएक ? किएक तँ ओ अनगढ़ हीरा आभूषण रूपमे शोभा नहि बढ़ौतैक । सोनक ढेपकेँ डोरामे बान्हि कऽ गरदनिमे लटका लिअय तँ केहन लगतैक ? मुदा वैह सोनक ढेपकेँ गढ़नि दऽ कऽ सुन्दर आभूषण बना देल जाइत छैक, तँ ओ आभूषण जैह पहिरैत अछि से सुन्दर लगैत अछि तेँ जँ प्रतिभाकेँ हीरा कहल जाय तँ अभ्यास थिक ओकरा खराजब क्रिया । प्रतिभा जँ सोन थिक, तँ अभ्यास थिक ओकर गढ़नि ।

तेँ कहऽ पड़ैछ जे अभ्यास आवश्यक अछि । निरन्तर अभ्यास किछु ने किछु लाभ दैते छैक । जीवनक लेल उपकारक होइते छैक । अतः मैथिलीक ई कहबी पूर्ण रूपेँ स्मरणीय ओ अनुकरणीय अछि जे–

घोषन्त विद्या लपटन्त जोर,
नहि किछु तँ थोड़बो थोड़ ।

–रामदेव झा

शब्दार्थ:

चिरकाल – बहुत काल

आवृत्ति – दोहरायब

निरन्तर – लगातार

फलप्रद – फल देबऽवला

कौलिक – कुलसँ सम्बन्धित

आत्मसात – हृदयमे बसा लेब

हस्तलेख – हाथसँ लिखल

संकोच – लाज

भूताक्षर – खराब अक्षर

कचोट – दुख ।

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) गाँधीजीकेँ कथीक कचोट रहलनि ।

(2) भूताक्षरक संबंधमे लेखक कोन उदाहरण प्रस्तुत कयलनि अछि ?

(3) नीक अक्षर आ खराब अक्षरसँ की लाभ आ हानि होइत अछि ?

(4) व्यक्तिक विशिष्ट क्षमता कोन कारणसँ निष्क्रिय भऽ समाप्त भऽ जाइत अछि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) निरन्तर अभ्याससँ की लाभ होइत अछि ?

(2) निरन्तर अभ्यास नहि कयलासँ की भऽ सकैत अछि ?

(3) जीवनकेँ उपयोगी आ सुन्दर बनयबाक लेल कोन साधन उत्तम होइछ ?

(4) कौलिक वा कोनो ज्ञान कखन सार्थक होइछ ?

(5) 'पक्षे वैयाकरणा:' उक्तिक आशय लिखू ।

(6) लिखना लिखबाक की उद्देश्य अछि ?

(ग) **निम्नलिखित उक्तिक अर्थकेँ स्पष्ट करू:**

(1) हीराक सौन्दर्य तखने झलकैत छैक जखन ओकरा खराजल जाइत छैक ।

(2) कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा आत्मसात् कऽ लैत अछि ।

(3) अभ्यास द्वारा बिगड़लो बातकेँ बनाओल जा सकैत अछि । जीवनक दिशा बदलल जा सकैत अछि ।

(4) प्रतिभा जँ सोन थिक, तँ अभ्यास थिक ओकर गढ़नि ।

(घ) **सही-गलती:**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ जीवनक समस्त गतिविधिकेँ उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि । ☐

(2) दू पहियाक साइकिल ओना ठाढ़ रहि सकैत अछि । ☐

(3) अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन प्रसन्न भऽ जाइत छनि । ☐

(4) महात्मा गाँधीकेँ अपन अक्षरक प्रति कोनो कचोट नहि छलनि । ☐

(5) अभ्यास द्वारा बिगड़ल बातकेँ बनाओल नहि जा सकैछ । ☐

(ङ.) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) अभ्यास एकटा एहन साधन अछि जाहिसँ .... उपयोगी ओ सुन्दर बनाओल जा सकैत अछि ।

(2) कौलिक ज्ञान तखने सार्थक होइत छैक जखन ओ ओहि ज्ञानकेँ अभ्यास द्वारा .... कऽ लैत अछि ।

(3) हाथक एहन कारीगरी आ .... ओकरा .... प्राप्त होइत छैक ।

(4) साइकिल पर चढ़बाक लेल लोककेँ पहिने .... करऽ पड़ैत .... ।

(5) अक्षर देखि पढ़नाहरक मोन .... भऽ जाइत छनि ।

(च) **निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू:**

(1) अवस्य (2) वियाकरण (3) आवीरती (4) आतमसात

(5) आतमीयता (6) परिक्षक (7) परिश्रमिक ।

भाषा अध्ययन:

(1) सहचर शब्द सर्वदा संग-संग युग्म रूप मे प्रयुक्त होइत अछि

जेना- चिर्री-चोथ, रंग-बिरंग ।

अही आधार पर कोनो दस गोट सहचर शब्द लिखि कऽ ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

(2) शारीरिक वा मानसिक व्यापार क्रिया कहबैत अछि ।

जेना- खोधब, गढ़ब, कतरब आदि ।

एहि आधार पर प्रस्तुत पाठसँ क्रिया शब्द चुनि कऽ लिखू ।

योग्यता विस्तारः

(1) अभ्यासक बल पर सफलता प्राप्त कयनिहार कोनो दू गोट घटनाक संग्रह कऽ ओकरा रोचक भाषामे लिखि कक्षामे सुनाउ ।

(2) 'अपन हस्तलेख' एहि विषय पर निबंध लिखू ।

(3) घोषन्त विद्या लपटन्त जोर, नहि किछु तँ थोड़बो थोड़- ई एकटा प्रसिद्ध कहबी अछि, अहि तरहक किछु कहबीक संग्रह करू ।

(4) अपन शिक्षकसँ मार्ग दर्शन लऽ अपन अक्षरकेँ सुधारबाक अभ्यास करू ।

अध्यापन संकेतः

(1) शिक्षकसँ अपेक्षा जे वर्गमे विद्यार्थीकेँ अक्षर सुधारबाक हेतु उचित मार्गदर्शन करथि ।

(2) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ विद्यार्थीकेँ मोहावरा और लोकोक्तिसँ परिचय कराबथि आ एकर संग्रह करबामे ओकरा सहयोग करथि ।

✦✦✦

7. भारत भवानी

प्रस्तुत कविता देश-भक्तिसँ सम्बन्धित अछि एहि कवितामे कवि राष्ट्रीय-एकताक वर्णन कयने छथि । भारत-वर्षक भौगोलिक आओर ऐतिहासिक वर्णन करैत सांस्कृतिक महत्ताक वर्णन कयल गेल अछि । प्राकृतिक छविक वर्णन करैत भारत-माताक गौरवपूर्ण इतिहास प्रस्तुत अछि । अपन मातृ- भूमिक यशोगान करैत विश्व-विजयी आओर विश्वक मुकुट होयबाक कामना कयल गेल अछि ।

जयतु माँ भारत-भवानी ।
जयतु माँ भारत-भवानी ॥

कच्छ कन्यातट अँहाक
कर-कोमल शोभय बंग वाला,
सिन्धु चरण पखारि रहले
अर्घ्य चढ़बय मेघ माला ।
ध्यान कश्मीरक मनोरम
केसरी कियारी अपन मानी,
शैलजा शंकर-प्रिया-पद पद्म
मे हम प्रीति जानी ।
अहीं माँ हे भव भवानी ॥

पञ्चनद प्रिय अँहाक भू
आसाम बाम भुजा विराजय,
दहिन भुज गुजरात प्रिय
महाराष्ट्र राष्ट्रक प्राण राजय ॥

तमिल, कन्नड़ कनक-नूपुर
मलय मलयालम बखानी,
मैथिली ग्रिमहार उड़िया
तेलुगु बङ्.ला बखानी ।
भारती-भारत-भवानी ॥

यश पताका अहाँक फहरय
अखिल भव मे हे भवानी
विश्व मे हो मान माता
हो विजय भारत भवानी ।
जयतु माँ भारत भवानी ॥

-**कमलाकान्त झा**

शब्दार्थ:

कच्छ – गुजरात प्रदेशक प्राचीन नाम कच्छ प्रदेश छल, गुजरातक एक भू-भागक नाम ।

कन्या तट – कन्याकुमारीक समुद्र तट,

कर – हाथ

बंग – बंगाल

सिन्धु – नदीक नाम (सम्प्रति पाकिस्तानमे अछि)

अर्घ्य – पूजाक सामग्री

केसरी-कियारी – केसर (सुगंधित पीअर एक फूल) छोट-छोट खेतक (कियारी)

शैलजा – पार्वती

पञ्चनद – पाँच नदीक भूमि (पंजाब प्रदेश)

ग्रिमहार – गाराक हार

चीर – वस्त्र

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचारः

(क) मौखिक प्रश्नः

कहू तऽ-

- एहि कविताक कवि के छथि ?
- भारत भूमिक चरण के पखारि रहल अछि ?
- भारत-भवानीकेँ अर्घ्य के चढबैत अछि ?
- भारतवर्षक तीन नदीक नाम कहू जे मिथिलाक्षेत्रमे बहैत हो ।
- भारतक राष्ट्रभाषा की थिक ?

(ख) लिखित प्रश्नः

(1) भारतक चौहद्दी लिखू ।

(2) कवि राष्ट्रक प्राण ककरा मानलनि अछि ?

(3) कवितामे भारतक कनक-नुपुर ककरा कहलगेल अछि ?

(4) कवि भारतक ग्रिमहार ककरा कहलनि अछि ?

(5) प्रस्तुत कवितामे कवि ककर यशक पताका फहरयबाक कामना कयलनि अछि ?

(6) कवि ककर मान-सम्मान बढ़ैबाक कामना करैत छथि ?

(ग) रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:

(i) कच्छ कन्या तट अहाँक
.... शोभय बंग वाला ।

(ii) केशरी क्यारी
.... ।

(iii) शैलजा .... पद-पद्य
मे हम प्रीति जानी ।

(iv) पञ्चनद प्रिय .... ।

(v) महाराष्ट्र राष्ट्रक .... ।

(घ) **निम्नांकित पाँतीक भाव स्पष्ट करू:**

(i) शैलजा शंकर-प्रिया पद-पद्म
मे हम प्रीति जानी ।

(ii) मैथिली ग्रिमहार उड़िया
तेलुगू बङ्गला बखानी ।

(iii) विश्वमे हो मान माता
हो विजय भारत भवानी

भाषा अध्ययन:

(1) उदाहरण देखिकऽ नीचा देलगेल शब्दसँ नव शब्द बनाउ-
जेना- भारत - भारतीय
राष्ट्र, दर्शन, मानव, दानव ।

(2) नीचाँ देल गेल शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू-
अर्घ्य, केशरी, शैलजा, मैथिली,
भवानी, राष्ट्रभाषा, दर्शन ।

(3) निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू-
जेना- दिन - राति
जय, देश, यश, कोमल, माँ ।

(4) निम्नलिखित शब्दसँ मिलैत-जुलैत शब्द बनाउ-
जेना- गर्व - पर्व ।
कर, भव, काम, बखान, मान, जय ।

योग्यता विस्तार:

- भारतवर्षक विशेषतासँ सम्बन्धित किछु कविताक संग्रह करू ।
- भारतक किछु स्वतंत्रता सेनानीक चित्र संकलित कऽ कक्षामे टाँगू ।
- भारतक मानचित्र बना कऽ कक्षामे टाँगू ।

अध्यापन संकेत:

- देश-प्रेमसँ सम्बन्धित आन-आन कविता बच्चाकेँ सुनाउ आओर ओकरा याद करबाक हेतु प्रोत्साहित करू ।

◆◆◆

8. खेल कूदक महत्त्व

खेल खेलायब मानव मात्रक स्वाभाविक प्रवृत्ति होइत अछि । एहिसँ आनन्दक अनुभव आ मन प्रफुल्लित होइत छैक । मानसिक थकान दूर होइत छैक आ नव स्फूर्ति सेहो अबैत अछि । छोट-छोट बच्चा अपन हाथक आङ्गुरकेँ मुँहमे ठूसि कऽ, माँटिमे ओंघरा कऽ, ठेहुनियाँ दऽ कऽ, दादा-नानाक पीठपर सवारी कऽ कऽ खेलाइत अछि, तऽ वैह बच्चा पैघ भेला पर कबड्डी, चिक्का, फूटबॉल, भोलीवॉल, क्रिकेट आदि खेल खेलाइत अछि आ आनन्दक अनुभव करैत अछि । खेलसँ व्यक्तिमे सहयोगक भावना, एकता, प्रेम, करुणा आ सहानुभूतिक प्रेरणा भेटैत छैक आ ओकर स्वाभाविक गुणमे बृद्धि सेहो होइत छैक । पढाइसँ मानसिक विकास होइत छैक तऽ खेलसँ शारीरिक विकास । शरीर ह्रष्ट-पुष्ट आ स्वस्थ होइत छैक । प्रस्तुत पाठमे लेखक खेलक विभिन्न प्रकारक वर्णनक-संग ओकर, महत्त्व एवं गुणक चर्चा कयलनि अछि ।

बाउ ! अहाँ पोथी पढ़ैत छी। रेडियो सुनैत छी । टी॰ भी॰ क प्रसार भेलासँ अहाँ टी॰ भी॰ सेहो देखैत छी ।

अहाँ टी॰ भी॰ पर रंग-विरंगक खेल देखैत छी । रेडियोसँ नाना प्रकारक खेल-समाचार सुनैत छी । प्राय: प्रत्येक दिन टी॰ भी॰ आ रेडियोसँ खेल-समाचार सुनाओल जाइत अछि । अहाँ देखैत होएब जे जखन-जखन क्रिकेटक समाचार सुनाओल जाइत अछि, कतेको गोटे कान आ छातीसँ रेडियो सटौने रहैत छथि । कतेक गोटे तँ भोजन-भात छोड़ि, टी॰ भी॰ लग बैसि, राति-दिन एक कऽ दैत छथि ।

अहाँ विद्यालयमे पढ़ैत छी । पोथीक अलावा खेलक घंटी सेहो होइत अछि । खेल-शिक्षक नाना प्रकारक खेल, ड्रील, पी॰ टी॰ करबैत छथि । भऽ सकैत अछि जे अहाँकेँ पोथी देखिते निन्द आबऽ लगैत हो । अहाँकेँ पढ़ऽसँ बेसी खेलऽमे मोन लगैत हो । अहाँकेँ मोन होइत हो जे पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ि हरदम खेलाइते रही । मुदा ई सोचैत छी जे विद्यालयमे खेलक घंटी किएक होइत अछि ?

बाउ ! खेलक अपन पृथक् महत्त्व छैक । पढ़ाइक संग खेलक अटूट संबंध छैक । खेल

जीवनक जरूरी अंग थिक । खेलसँ शरीर पुष्ट होइत छैक । मांसपेशी मजबूत होइत छैक । शरीरमे आकृति चढ़ैत छैक । खेल मनुष्यकेँ स्वस्थ रखैत अछि । पोथी मानसिक ज्ञानक साधन थिक आ खेल-कूद मनोरंजनक संग शारीरिक शिक्षाक साधन थिक । खेल अहाँक मनोरंजन करैत अछि । मनोरंजन जीवनकेँ सुखमय बनबैत अछि ।

खेल विश्व बधुत्वक भावना बढ़बैत अछि । खेलाड़ीक आपसमे जान-पहचान बढ़बैत अछि। सत्ये, खेल मैदान एकटा परिवार सन होइत अछि । खेल अहाँक अन्दरमे नुकायल जरूरी गुणक विकास करैत अछि । कर्त्तव्यक महत्त्व सिखबैत अछि । इच्छा-शक्ति आ संकल्प बढ़बैत अछि । सामूहिक एकता आ जीवनमे उन्नति हेतु प्रयास करबाक आदतिकेँ बढ़बैत अछि ।

स्वस्थे शरीरमे स्वस्थ मस्तिष्कक निवास संभव अछि । आ शरीरकेँ स्वस्थ तथा हृष्ट-पुष्ट बनाबऽ लेल खेल-कूद जरूरी अछि ।

नियमित रूपसँ खेल खेलायब अहाँकेँ नीरोग राखत । अहाँ बीमार नहि होयब । अंगरेज लोकनिक ई धारणा छनि जे छात्र जीवनमे खेलक भावनासँ शिक्षित होयबाक कारणेँ 'एटन' क मैदानमे अंगरेज लोकनि 'वाटरलू' क युद्धमे नेपोलियन सन बहादुरकेँ परास्त कऽ सकलाह ।

सुविधाक हिसाबें हम खेल-कूदकेँ मोटा-मोटी दू भागमे बाटि सकैत छी । एक तऽ एहन खेल जे घरमे खेलल जा सकय । माने, बैसलो छी, खेलाइतो छी । जेना– लूडो, कैरम, शतरंज, पचीसी कन्नाठुट्टी आदि । एहि तरहक खेल, अहाँकेँ मानसिक शान्ति दैत अछि । उचित निर्णय लेबाक ज्ञान सिखबैत अछि । सही रास्तापर चलबाक उपदेश दैत अछि । इच्छा आ संकल्प शक्तिकेँ मजबूत बनबैत अछि ।

झिझिर कोना, नुक्का चोरी, दण्ड बैसक, जुड़ो-कराटा, टेबुल टेनिस आदि घरक बाहर आ भीतर दुनू ठाम खेलायल जा सकैत अछि । मुदा, किछु, खेल एहन अछि जकरा हेतु मैदान जरूरी छैक । जेना- कुस्ती, चिक्का, कबड्डी, फूटबॉल, भोलीबॉल, क्रिकेट, हॉकी, बैडमिन्टन, लम्बा कूद, ऊंचा कूद, बाधा दौड़ आदि । एकर अतिरिक्तो बहुत रास खेल होइछ, जेना– टेनिस, टेबुल टेनिस, एक्वॉस, बास्केट बॉल, बेसवॉल, गोल्फ, भारोत्तोलन, पोलो, ब्रिज, खो-खो आदि ।

बाउ ! की अहाँ जनैत छी जे कोन खेलमे कयकटा खिलाड़ी होइत छथि । देखू कबड्डीमे सात टा, भोलीवॉलमे छः, हॉकीमे एगारह, क्रिकेटमे एगारह, वैडमिन्टनमे दू, शतरंजमे एक, वॉस्केटबॉलमे पाँच, टेबुल टेनिस आ टेनिसमे एकसँ दू आओर नेट बॉलमे सातटा ।

जनैत छी भारतक राष्ट्रीय खेल कोन थिक ? 'हॉकी'-भारतक आ पाकिस्तानक राष्ट्रीय खेल थिक । तहिना इंग्लैण्ड आ आस्ट्रेलियाक राष्ट्रीय खेल थिक क्रिकेट, अमेरिकाक-बेसबॉल ।

खेल चाहे जे हो ओहिमे अनुशासन बहुत जरूरी रहैत छैक ।

खेलक मैदानमे अहाँ अनुशासन, आज्ञापालनक आदति आ विजयक संकल्प प्राप्त करैत छी । इएह गुण युवककेँ नीक सैनिक बनबैत छैक । खेल चरित्र निर्माणमे सेहो सहायक होइत अछि । खेलाड़ी स्वेच्छाचारी नहि होइत अछि । ओ नायकक आज्ञाक पालन करैत अछि । खेलाड़ी सम्मानपूर्वक अपन कर्त्तव्य करैत अछि आ जीतमे सहायक होइत अछि । खेल सामूहिक भावनासँ, मिलि कऽ कार्य करबाक शिक्षा दैत अछि । अहाँ भारतीय हाँकीक जादूगर ध्यानचंदकेँ जनैत छियनि ? ध्यानचंद ओलंपिक खेलमे बरोबरि हॉकीमे भारतकेँ स्वर्णपदक दिअबैत रहलाह । ध्यानचंद भारतीय सेनामे लाँस नायक छलाह । 1936 के बर्लिन ओलंपिकमे हिटलर धरिकेँ प्रभावित कयने छलाह । हिटलर अपना दिससँ एकटा पदक देने छलनि । हिटलर ई इच्छा व्यक्त कयने छलाह जे यदि ध्यानचंद जर्मनी आबि जाथि तँ हुनका मार्शल बना देल जायत । बाउ ! आब सोचू ! खेल-कूद अहाँकेँ जीवनमे उच्च पद, उच्च नौकरी आ प्रतिष्ठा प्राप्त करबामे सहायक होइत अछि । ध्यानचंदक कहब छलनि-"लगन, साधना आ खेल भावना इएह सफलताक पैघ मंत्र थिक । खेलऽ काल ध्यान राखक चाही जे हारि वा जीत खेलाड़ीक नहि, संपूर्ण देशक थिक"

खेल भावना आ सामूहिक एकतापर बल दैत ध्यानचंदजी कहलनि-"हमर तऽ प्रयास रहैत छल जे हम गेंदकेँ गोल लग लऽ जा कऽ अपन कोनो संगी खेलाड़ीकेँ दऽ दी, जाहिसँ ओ गोल कऽ सकए आ गोल करबाक बाह-बाही ओकरे भेटैक । आ एही खेल भावनासँ हम हिटलरक हृदय जीति सकलहुँ ।"

एहिसँ ई साफ जाहिर होइत अछि जे खेलमे स्वार्थी नहि बनबाक चाही । सामूहिक

प्रयाससँ खेलमे जीत हासिल होइत छैक ।

एकटा बात आरो ! खेलमे खेलाइत-खेलाइत अहाँ आपसमे लड़ऽ लगैत छी । मारि-पीट करऽ लगैत छी। कपर फोड़ी भऽ जाइत अछि। ई नीक बात नहि ! खेल हमरा दोस्तीक भाव सिखबैत अछि । खेल मिल-जुल कऽ रहबाक बात सिखबैत अछि । परिवार, समाज, देश आ विश्वक संग एकता कायम रखबाक प्रेरणा दैत अछि। खेल साहस दैत अछि आ विपत्ति-बाधासँ लड़बाक शिक्षा दैत अछि ।

आजुक वैज्ञानिक युगमे पढ़ाइसँ कम महत्त्व खेलक नहि छैक । अहाँ जनैत छी जे कुस्तीमे गामा विश्व विजयी मानल जाइत छलाह । लगातार परिश्रम आ अभ्यासक प्रतापेँ पी॰ टी॰ उषा उड़न परी कहबैत छथि । आइ-काल्हि क्रिकेट खेलक लोकप्रियता बड्ड बढ़ि गेल अछि । जहिना पूर्वमे क्रिकेट खेलमे सुनील गावस्कर आ कपिलदेव आदि खिलाड़ी विश्वमे भारतक नाम उजागर कयलनि, तहिना आइ-काल्हि सचिन तेंदुलकर, महेन्द्र सिंह धोनी आदि क्रिकेटक खिलाड़ी विश्व कप जीति कऽ भारतक नाम उजागर कयलनि अछि ।

तेँ, बाउ ! खूब पढ़ू आ खूब खेलाउ । पढबो करू। खेलयबो करू । जाहि खेलमे रुचि हो, ताहिमे जुटि जाउ । विश्वमे अपन नाम आ देशक नाम जगजियार करू ।

-उपेन्द्र दोषी

शब्दार्थ:

अटूट	-	जे खण्डित नहि हो
परास्त	-	पराजित
पृथक्	-	भिन्न
स्वेच्छाचारी	-	अपन इच्छानुसार कार्य कएनिहार
कायम	-	स्थिर, निर्धारित

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) इंग्लैण्ड आ अमेरिकाक राष्ट्रीय खेलक नाम बताउ ।

(2) क्रिकेट आ फूटबॉल खेलक अतिरिक्त आओर पाँचटा खेलक नाम बताउ ।

(3) कबड्डी, भोलीबॉल, टेनिस, टेबुल टेनिस खेलमे कएकटा खिलाड़ी होइत छथि ?

(4) नीक स्वास्थ्य आ नीक समझ दुनू जीवनक उत्तम बरदान थिक । ई किनकर कथन अछि ?

(5) खेलक संबंधमे गाँधीजीक की कहब छलनि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) पढ़ाइक संग खेलक महत्त्व किएक अछि ?

(2) खेल-कूद कोन तरहक शिक्षाक साधन थिक ?

(3) भारतक राष्ट्रीय खेल कोन थिक ?

(4) घरक भीतर आ मैदानमे खेलल जायबला खेलक नाम लिखू ।

(5) ध्यानचंद कोन खेलसँ सम्बन्धित खिलाड़ी छलाह ?

(6) ध्यानचंदक सम्बन्धमे अहाँ की जनैत छी ?

(ग) **सही-गलतीः**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) खेलसँ शरीर पुष्ट आ मांसपेशी कमजोर होइत अछि । ☐

(2) खेलसँ आलस्य दूर होइत अछि । ☐

(3) खेल कूद मनोरंजनक संग शारीरिक शिक्षाक साधन थिक । ☐

(4) लगन साधना आ खेल भावना इएह सफलताक मूल मंत्र थिक । ☐

(5) खेल दोस्तीक भावकेँ मेटबैत अछि । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी .... शिक्षाक पक्षमे छलाह ।

(2) सुविधाक हिसाबेँ हम खेल-कूदकेँ मोटा-मोटी .... भाग मे बाँटि सकैत छी ?

(3) खेल चरित्र निर्माणमे सेहो .... होइत अछि ।

(4) हॉकीक जादूगर ध्यानचंद, ओलम्पिक खेलमे बरोबरि भारत केँ .... दिअबैत रहलाह ।

(5) लगातार परिश्रम आ अभ्यासक प्रतापेँ .... उड़नपरी कहबैत छथि ?

(ङ.) **निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू:**

ओलांपिक, इक्षा, अनुसासन, परयन्त, स्वास्थ्य ।

भाषा अध्ययन:

(1) संज्ञा आ सर्वनामक विशेषता बतौनिहार शब्द विशेषण कहबैत अछि-
जेना - नीक, अधलाह, नव, पुरान, आदि ।
एहि आधार पर दस गोट विशेषण चुनि कऽ ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

(2) 'उड़नपरी' आ 'हॉकीक जादूगर'-ई दुनू विशेषण क्रमशः पी॰ टी॰ उषा आ ध्यानचंदक लेल प्रयुक्त भेल अछि । एहिना कोनो दू गोट व्यक्तिक लेल प्रयुक्त विशेषण शब्द ताकि कऽ बताउ जे ओ किनका लेल प्रयुक्त भेल अछि ।

(3) कोनो पाँच गोट सार्वनामिक शब्द ताकि कऽ लिखू ।

(4) समान अर्थ प्रकट करऽवला शब्द समानार्थी शब्द कहबैत अछि-
जेना - भवन-मकान, पोथी-पुस्तक ।

(5) नीचाँ देल गेल समानार्थी शब्दकेँ सही-सही मिलाउ-

'क'	'ख'
(i) अन्दर	(क) मेहनति
(ii) नीक	(ख) निरंतर
(iii) प्रतिष्ठा	(ग) विघ्न
(iv) बल	(घ) मित्रता
(v) दोस्ती	(ङ) जोर
(vi) बाधा	(च) सम्मान
(vii) लगातार	(छ) बढ़ियाँ
(viii) परिश्रम	(ज) भीतर

योग्यता विस्तारः

अहाँकेँ कोन खेल सभसँ नीक लगैत अछि आ किएक ? जे खेल अहाँकेँ सभसँ नीक लगैत अछि तकरा वर्णन करू।

अध्यापन संकेतः

शिक्षकसँ अपेक्षा जे विद्यार्थीकेँ हुनक रूचिक अनुसार खेलक सम्बन्धमे बताबथि ।

✦✦✦

9. नीति पद

नीक-बेजायक व्यावहारिक ज्ञान देनिहार वाक्य वा पद नीति पद कहबैछ । की करी की नहि करी, विपत्तिमे धैर्य, अपन कर्त्तव्यपर भरोस राखब सफलताक कुंजी थिक । सफल जीवनक हेतु उपदेश देब एकर मुख्य लक्ष्य थिक । कवि प्रस्तुत कवितामे उदहरण सहित सरल आ सुबोध भाषामे उपदेशात्मक एवं प्रेरणादायक नीति पद प्रस्तुत कयलनि अछि ।

आनक दुख सँ जे दुखी सैह कहाबथि संत
गौतम गान्धी नानकक, सैह कहैए पंथ ।

केहनो विकट विकाल हो, बाँहिक करी भरोस
चलबै तऽ घटबे करत बाट कोस पर कोस ।

बिनु पढ़ने नहिं ज्ञान हो बिनु ज्ञाने नहि मान
धन नहि, पद नहि, विश्वमे पूजित छथि विद्वान ।

सब देशक इतिहास मे नीक आर अधलाह
नीकक करी उपासना नीके होइत जेताह ।

जीवन सँ जँ प्रेम अछि, करू समय सँ प्रेम,
अन्धकार नहि थम्हि सकत बारू बुद्धिक टेम ।

-उदयचन्द्र झा 'विनोद'

शब्दार्थ :

संत - साधु
पंथ - एक निश्चित विचार धारा
टेम - दीपक टेमी (बत्ती)

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक-प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) हमरालोकनिकैं ककर उपासना करबाक चाही ?

(2) धन पैघ होइत छैक वा विद्या ?

(3) संत ककरा कहबाक चाही ?

(ख) **लिखित-प्रश्नः**

एहि प्रश्नक उत्तर लिखू-

(1) आनक दुखसँ के दुखी होइत अछि ?

(2) विपत्तिक समयमे मनुष्यकैं की करबाक चाही ?

(3) सौंसे विश्वमे किनकर पूजा होइत छनि ?

(4) एहि कवितामे 'करू समयसँ प्रेम' क की अर्थ अछि ?

(ग) **एहि पाँतीकैं शुद्ध करूः**

(1) आनक दुखसँ जे सुखी, सैह कहाबथि संत
गौतम, गाँधी नानकक, सैह कहैए पंथ ॥

(2) धन नहि, पद नहि, विश्वमे पूजित छथि विद्वान
बिनु पढ़ने नहि ज्ञान हो, बिनु ज्ञाने नहि भान ॥

(3) सब देशक इतिहासमे, नीक आर अधलाह
नीकक करी उपासना, नीके होइत बताह ॥

भाषा-अध्ययनः

(1) नीचाँमे किछु शब्द-युग्म देल गेल अछि, जे सुनबामे समान बुझाइत अछि, किन्तु अर्थ अलग-अलग होइत छैक। एहन शब्दकैं श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द कहल जाइत छैक । अहाँ देल गेल शब्दक अर्थ स्पष्ट करू-

सत - संत, वट - बाट, धन - धान, पथ - पंथ, कोश - कोष ।

(2) एहि शब्दक विपरीतार्थक (उनटा अर्थ बला) शब्द लिखू-

दुख, भरोस, ज्ञान, विद्वान्, अंधकार ।

योग्यता-विस्तारः

(1) एहि पाठसँ मिलैत-जुलैत आन पद सभक संकलन करू ।

(2) विद्यालयमे होअय बला सांस्कृतिक-कार्यक्रममे अपन संकलित-पदमेसँ रुचिगर पद सभकेँ गाबि कऽ सुनाउ ।

अध्ययन-संकेतः

(1) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ कक्षामे गौतम, गाँधी, नानक आदि महापुरुषक जीवनसँ बच्चाकेँ अवगत, कराबथि ।

◆◆◆

10. सिनेहिया

जाहिसँ सत्यक प्रति स्नेह हो ओकर कण मात्रो भेटला पर प्रसन्नताक पाराबार नहि होइछ । जेना सिनेहियाकेँ भेलैक । ने माय छैक, ने भाइ, बापो छैक बताह । मामाक संग रहैत अछि, रेलगाड़ीक इंजिनसँ खसल जरलाहा कोयला बीछि कऽ आ ओकरा बेचि कऽ जीवन चलबैत अछि । एहन साधनहीन सिनेहियाक आत्मामे पढ़बाक उत्कट इच्छा ततेक छैक जे ओ पढ़बाक इच्छा व्यक्त करैत अपन आ अपन भायक नाम लुल्हुआ पर लिखबैत अछि । खुशीसँ बेर-बेर ओकरा देखैत अछि आ सभकेँ देखबैत अछि ओकर प्रसन्नताक सीमा नहि । वास्तवमे सभक लेल शिक्षा अति आवश्यक अछि । लेखक शिक्षाक महत्ताकेँ सिनेहियाक चरित्रक माध्यमे बड़ सजीव, मार्मिक आ पात्रानुकूल भाषामे देखौलनि अछि ।

ओ आश्वासन देलनि जे एक घंटामे काज सम्पन्न भ' जायत । ताबत बैसू । हमहूँ हुनक आदेशकेँ अक्षरशः पालन करैत पोस्ट आफिसक ओसारा पर राखल बेंच पर डाँड़ मोड़लहुँ । मोन भेल जे गामे चलि जाइ, मुदा रौद देखि हिम्मति पस्त भ' गेल, संगहि काजक आवश्यकता सेहो गाम जयबाक विचारक अवसान क' देलक ।

एम्हर-ओम्हर तकिते रही । तकैत छलहुँ सड़कक दुनू कात पंक्तिबद्ध भेल ठाढ़ कठघरा सभकेँ । आ कि तखनहि एकटा छह-सात बर्खक नेना टोकलक, 'हौ ! हमरा हाथ पर नाम लिख देब' ?'

ओहि नेनाक स्वर हमरा बड़ नीक लागल ।

एकबेर ओकर आपादामस्तक नजरि खिड़ौलहुँ । ओकर मुस्कियाइत निर्दोष आकृति हमरा आकर्षित क' लेलक । आत्मीयता बूझि पड़ल ओकरासँ ।

हमरा 'डॉट' पेन फोलैत देखि ओ अपन हाथ बढ़ा देलक। हम पूछि देलियै, 'की नाम छौक ?'

'सिनेहिया ।'

हम ओकरा हाथ पर ओकर नाम लिखि देलियैक । ओ एकबेर अपन नाम निहारलक । हमरा बूझि पड़ल जे ओ पढ़बाक कोशिश क' रहल अछि ।

'एगो नाम आरो लिख देब' ?'

हम ओकर दोसर हाथ पकड़ि लेलहुँ ।

'अइमे नञि लुल्हुआपर लिख दैह ।'

ओ अपन बामा हाथ छोड़बैत दहिना हाथक लुल्हुआ दिस संकेत करैत बाजल, 'कोन नाम लिखबहक ?'

हम प्रश्न दृष्टियेँ ओकरा दिस तकलहुँ ।

'हमर भायक नाम लिख दैह-अर्जुनमा ।'

हम ओकर लुल्हुआपर ओकरा भायक नाम लीखि देलियैक । एकटा उत्सुकता जनमि गेल हमरा मोनमे । हम पूछि देलियैक, 'कत' रहैत छैँ ?'

'एही जग । टीसनेपर ।'

'घर कत' छौक ?'

'हस्पताल के पाछूमे ।'

'अर्जुनमा की करैत छौक ?'

'ऊ कहिया ने मरि गेलै ।' निधोख बाजि गेल ओ । ओकरा चेहरा पर विषादक कोनो रेखा नहि छलैक ।

हम चुप भ' गेलहुँ । एकबेर पुनः ओकरा उपरसँ नीचाँ धरि निहारलहुँ । ओकरा स्थितिमे कोनो परिवर्तन नहि छलैक । ओ पहिने जकाँ मुस्कियाइत ठाढ़ छल ।

'चुप कैले' भ' गेल' ? ओ टोकि देलक। हम चुप्पे रहलहुँ ।

'तकलीफ भ' गेल' ?' अपना घरके ककरो जुआनी मौगैत नञि देखने छहक ?'

एहि बेर आओर कोनादन लागल ।

'की भेल रहैक अर्जुनमा कैँ ?' हम पूछि देलियैक ।

'हमरा नञि बूझल हय । लोक आऊर बोलै जे बलू जुआनी मौगैत भ' गेलै ।'

ओ बड़ आत्म-विश्वासक संग बाजि रहल छल, 'बाउ कहै जे बलू हमर दाहिने हाथ कटि गेल ।'

'बाउ की करैत छौक ?'

'कतौ लोक आऊरक अइँठ-कुइठ खाइत होतै ।' हम प्रश्न दृष्टियेँ ओकरा दिस तकलहुँ ।

'नञि बुझलहक ? सनकि गेल हइ ।'

'एहि ठाम रहैत छौक ?'

'अहँऽऽऽ । भगमान जाने कत' हइ ।' ओ मुह बिजकबैत बाजल ।

'तोँ माइक संग रहैत छेँ ?'

'नञि ! ऊहो मरि गेल हइ । हम त' मामा जरे रहै छियै ।' ओ निर्विकार भावेँ बाजल ।

'माय कोना मरि गेलौ ?'

'लोक आऊर कहै हइ जे एगो 'केश' मे फँसि गेलै ।' निश्चिन्त भ' बेंच पर बैसैत बाज' लागल, 'हमर माय एगो साहेब ओइ जग भनसा-भात करै । साहेब के चारि गो बच्चा रहै-एगो बियाहीमे आ तीन गो सगहीमे । बियाही बहु नञि रहै । सगही कहाँदन अपन सतबा बेटा के बड़ दु:ख दै । एकदिन ओइ छौंड़ाकैँ अपन औंठीमे स' किदन चटा देलकै आ छौंड़ा मरि गेलै । छौंड़ा के औंठी चटबैत हमर माय देखने रहै । हमर माय साहेब के कहि देलकै, से कहाँदुन ओही लागी साहेब के बहु हमरा माय के मरबा देलकै ।'

ओकर गप हमरा नीक नहि लागल। बजलहुँ, 'ई सिनेमा सन खिस्सा भेलहु । पतिआइ बला नहि भेलौ । खजौली एते आगाँ नहि छैक ।

ओ बाजल, 'हम की जान' गेलियै । लोक आऊर जे बोलै हइ सैह ने कहब' ।

हम गप बदलैत पुछलियैक, 'मामा की करैत छौक' ?

'बिजनिस ।'

'कथी के ?'

'कोइला के ।'

'तखन नीके जकाँ खाइत-पीबैत होयबेँ ?'

'निम्मन नाहित त' नहिये, तखन हँ... कहुना पेट भरि जाइ हइ।' ओ बाजल, हँ ! एकटा गप हइ । हमरा आऊर के ओते दु:ख नञि होइ हइ । मामा-मामी के सहइयो पड़ै हइ, तैयो धीया-पूता लागी कुच्छो-ने-कुच्छो लेबे करै हइ ।'

'से किएक ? कहैत छेँ जे मामा कोइलाक बिजनेस करै-ए ।'

'कोनो दोकान खोलने हइ ?'

'तखन ?'

'ऊ टरेन के डरेबर हइ ने, ओकरे स' मेल–पाँच केने हइ । टीसन पर त' नहिये, बाध बोनमे डरेबर कोइला खसा दै हइ ।'

'कोइला खसाब' के पाइयो लैत छौक ?'

'आइ काल्हि मँगनीमे के, ककरा आ कथी दै हइ ?'

'कतेक पाइ लैत छौक ?'

'से हमरा नञि बूझल हय । एकदिन मामा स' पुछलियै त' कहलक बलू तोरा कोन मतलब हउ तइ स' ?'

'नफा तँ ओहूमे नीके होइत होयतैक ।'

'ऊँह ! मामा कहै बलू डरेबरे कुहरा क' ल' लै हइ त' की बचतै ? तखन 'नञि' स' 'हँ' नीक ।'

'तों किछु करैत छँ कि नहि ?

'हमहुँ कोइले बीछै छियै । जखनी क' टरेन अबै हइ, त' इंजन लग जरलाहा कोइला आऊर जे फेकै हइ, उहे बीछै छियै ।

'की करैत छँ बीछि क'।

'सेहो नै बुझै छहक ?' ओ एकबेर हँसल, 'चाहक दोकानदार आऊरके दै छियै ।'

'कतेक पाइ दैत छौक ?'

'एक दिन के कहियो एको गो रुपैया दइ हइ आ कहियो डेढ़ो गो ।'

ताबत कोइला बिछनिहार ओकर संगी सभ आबि गेलैक । ओ सभ नीचाँ सड़क पर ठाढ़ छल । संगी सभकेँ देखितहि ओ किछु अकानलक आ पुनः बाजल, 'हे आब जाइ छिअ' । टरेन के टाइम भ गेलै' ।

ओ आब नीचाँ उतर' लागल । मुदा किछु दूर जा क' घुरि आयल ।

'एगो बात पुछिय' ?

'पूछ ने।' हम बजलहुँ ।

'तों त' पढ़ल होयब' ?

हम मुस्कियाइत स्वीकारात्मक मूड़ी डोला देलहुँ ।
आ ओ एकटा विशिष्ट प्रवेंगँ ओत' सँ चलि गेल । संगी सभक हेंजमे सभकेँ अपन हाथ आ लुल्हुआ पर लिखल नाम देखाब' लागल । किछु दूर धरि संगी सभमे ओकरा चिन्हलियैक मुदा तकर बाद एना ने मिज्झर भ' गेल जे चिन्हि नहि सकलियैक ।

सात मास पर गाम आयल रही । गाड़ीसँ उतरितहि बूझि पड़ल जे टीसन उदास होअय । एम्हर-ओम्हर तकलहुँ । केओ परिचित नहि भेटल । अन्तमे अटैची उठा क' बिदा होम' लगलहुँ कि केओ हमरा हाथसँ अटैची ल' लेलक । घुरि क' तकलहुँ। हम ओकरा चिन्हि गेलहुँ, मुदा एकटा अप्रत्याशित नजरियेँ ओकरा दिस तकलहुँ ।

'हमरा नञि चिन्हल' ? हम सिनेहिया छी ।' ओ परिचय दैत बाजल ।

हमर सम्पूर्ण मानस पटल ओहि दिनक घटना पर केन्द्रित भ' गेल ।

'बहुत दिन पर अएलहक-ए ?'

हम स्वीकारात्मक उत्तर दैत पुछलियैक, 'तोँ एखन की करैत छेँ ?'

'नञि पूछ' । मामा सेहो तबाह हइ आ हमहूँ तबाहे छी ।'

'किएक ?'

'एखुनती सब टरेन बन्द हइ । खाली तोँ जइ स' अएलह-ए उहे खूजल हइ ।'

'ट्रेन किएक बन्न छैक ?' ट्रेन बन्न होयबाक सूचना आ कारण हमरा बुझल छल, तैयो पुछलियैक ।

'कहै हइ कहाँदन सरकार के घरमे कोइले नञि हइ ।'

'तखन तँ बड़ दिक्कत होइत होयतैक लोक सभकेँ ।'

'लोक आऊर के जे होइ हइ से होबे करै हइ । हमरा आऊरके त' हाथे-पयर बन्द भ' गेलै ।

'तँ एखन की करैत छेँ टीसन पर ?

'आब खाली अही टरेन टाइममे अबे छियै । पसिन्जर आऊरके हमरा बुते उठ' जोगर समान रहै हइ त' गाम पर पहुँचा दै छियै ।'

'तोरा बुतेँ उठै छौ भरिगर समान ?'

'हँ, हौ ! मामा बोलै हइ जे बलू केहनो भारीके पेट स' उठा सकै छहक । मुदा हम अइ बातके माने नञि बुझै छियै । समान त' उठा लै छियै ।'

एकटा क्षणिक चुप्पीक साम्राज्य स्थापित भ' गेलैक ।

चुप्पी तोड़ैत ओ बाजल, 'तौं जइ जग नोकरी करै छहक ओत' हमरो ल' चलब' ?'

'की करबैं ओत' जा क' ?'

'नोकरी।' मुदा पुनः सम्हारलक' 'नञि, नञि। तोहर खाना बना दीतिय' आ पढ़ियो लितौं ।'

'खाना बनाब' अबैत छौक ?'

'हँ ! भिलबाके होटलमे दू महीना बैराके काज केलियै । ओत्तै सीखलियै । कनी-मनी बाँकी हेतै त' तोरा ओइ जग सीख लेबै ।'

हमरा ओहि दिनक ओ क्षण मोन पड़ि गेल जखन ओकरा बजाब' ले' हम आकुल भ' गेल रही आ ओ अपन संगी-तुरियामे मिज्झर भऽ' अदृश्य भ' गेल छल । हम ओकरासँ पुछलियैक, 'मामा-मामी जाय देतौक ?'

'से तौं कहिया जेबहक ?' प्रश्नक उतारा ओ प्रश्नेसँ देलक ।

'परसू ।'

'तखन मामा-मामी आऊर स' पूछि लेबै । हमरा बिसवास हय जे मामा-मामी आऊर मनाही नञि करतै । नीको काज लागी कतौ लोक रोकलकै ग' ?

ओकर सम्पूर्ण आकृति खिलखिला उठलैक । बूझि पड़ल जे एहिसँ पहिने ओ कहियो एतेक प्रसन्न नहि छल । ओकरा एकटा पैघ उपलब्धि भेल रहैक । ओकरा अपन प्रिय वस्तु ओहि दिन भेटि गेल रहैक ।

संग ल' जयबाक बात पर हम निर्णय नहि क' पाबि सकल रही । सोचैत रही जे की कहीयैक ? ओकर उत्साह बढ़ि रहल छलैक । पुछलक, 'एखनी त' गामे जयबहक ?'

'हँ ! बजारे होइत जयबै। लड्डू किनबाक अछि ।'

सिनेहिया अटैची उठा, पूब दिस, हमर आगाँ-आगाँ बिदा भ' गेल ।

-प्रदीप बिहारी

शब्दार्थ:

विषाद	–	दुख
आपादमस्तक	–	पैरसँ माथ धरि
निम्मन	–	नीक
अकानब	–	ध्यान देब
फोलब	–	खोलब
सनकब	–	बताह हैब
पतिआयब	–	विश्वास करब

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) सिनेहिया ककरा संग रहैत छल ?

(2) सिनेहियाक मामा कोन काज करैत छल ?

(3) ट्रेन बंद भेलासँ सिनेहिया किएक चिन्तित छल ?

(4) ट्रेन बन्द हैबाक की कारण छल ?

(5) सिनेहिया ककरा संग आ किएक जाय चाहैत छल ?

(6) भिलबा के छल ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) सिनेहिया कोन काज करैत छल ?

(2) सिनेहियाक भायक नाम की छल ?

(3) सिनेहियाक मायक मृत्यु कोना भेलैक ?

(4) सिनेहियाकेँ कथीक जिज्ञासा प्रबल रहैक ?

(ग) **सही-गलती:**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) कोयलाक चोरी करब गलती बात थिक । ☐

(2) कोयलाक अभावमे मात्र ट्रेन बन्द भऽ सकैछ । ☐

(3) सिनेहियाक पिता सनकल छल । ☐

(4) सिनेहियाकेँ पढ़बाक बड़ इच्छा छलैक । ☐

(घ) **नीचाँ देल गेल वाक्यमे रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) लोक आऊर बोलै । जे बलू जुआनी .... भ' गेलै ।

(2) कतौ लोक आऊरक अइँठ-कुइठ .... होतै ।

(3) निम्मन नाहित त' नहिये, तखन हँ, कहुना .... भरि जाइ हइ ।

(4) टीसन पर त' नहिये, बाध बोनमे .... कोइला खसा दै हइ ।

(5) ऊँह ! मामा कहै बलू .... कुहरा क' ल' लै हइ, त' की बचतै ?

(ङ) **निम्नलिखित शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:**

दृष्टि, पंक्तिबद्ध, मुस्कियाइत, निर्दोष, लुल्हुआ ।

(च) **नीचाँ देल गेल शब्दकेँ शुद्ध करू:**

लुलुहा, असपताल, खिस्सा, निरविकार, मिझर ।

अनुमान आ कल्पना:

नीचाँ जे रूप-रेखा देल गेल अछि ताहि आधार पर पूरा कथा लिखू-

सेठजी बानर पोसलनि पंखा हौंकबाक हेतु .... नोकरक काज नहि-हुनक नाकपर माछी बैसल ...... बारंबार बैसल ...... बानर क्रोधसँ एक ढेपा मारलक .... सेठजीक नाक टूटि गेल ।

भाषा अध्ययनः

शब्दक अन्तमे जे कोनो शब्द वा शब्दांश आबि कऽ अर्थमे परिवर्त्तन करय ओकरा प्रत्यय कहल जाइछ ।

जेना- हार - किननिहार

आक - उड़ाक' चलाक

आयब - बतिआयब, मुस्किआयब

अही आधार पर दस गोट शब्द बनाउ ।

चिह्न विचारः

पूर्ण विराम - '।' वाक्य पूर्ण भेला पर एकर प्रयोग होइछ ।
जेना - राम पढ़ैत अछि ।

प्रश्नवाचक - '?' वाक्यमे प्रश्न करबाक वा पूछबाक बोध भेला पर एकर प्रयोग होइछ । जेना - की राम पढ़ैत अछि ?

विस्मयादिबोधक - '!' वाक्यमे हर्ष, दुःख वा आश्चर्यक बोध भेला पर एकर प्रयोग होइछ । जेना - वाह ! अहाँ मैच जीति गेलहुँ ।

प्रस्तुत कथासँ प्रश्नवाचक आ विस्मयादिबोधक वाक्यकेँ ताकि कऽ लिखू ।

अध्यापन संकेतः

शिक्षकसँ अपेक्षा जे विद्यार्थीकेँ प्रत्ययक विशेष जानकारी दैत अभ्यास कराबथि ।

✦✦✦

11. बाढ़ि

बाढ़ि एकटा प्राकृतिक आपदा थिक । एकर भयाबह रूप देखि लोकक मोन सिहरि उठैत अछि । ह्रदय काँपि जाइत छैक । खेत-खरिहान, बाध-बोन सभ डूबि जाइत छैक, अन्न-पानि नष्ट भऽ जाइत छैक, माल-जाल भसिया जाइत छैक, लोक बेघर, बेसहारा भऽ जाइत अछि । कतेको स्थलक नामोनिशान मिटा जाइत छैक, सभठाम हाहाकार आ करुणा पसरि जाइत छैक । भूखैं लोक बिलबिलाय लगैत अछि । भोजन, वस्त्र आ आवासक दुःख कमोवेश मात्रामे सभक संग रहैत अछि । एहनामे ककरा के देखय आ पूछय । सभक आँखि मदतिक आशा आ अपेक्षासँ भरल रहैत अछि । कवि बाढ़िक एहि भयावह दृश्यक वर्णन बड़ सजीव ढ़ंगे कयलनि अछि ।

बाढ़ि एलै, भरि गेलै पानि
आ उजड़ल गामक लोक।

चारूकात हहारो मचलै
सबठां पसरल शोक ।।

खेत डुबल, खरिहानो डुबलै
डुबलै घर के अन्न ।

चुल्हा टुक-टुक ताकि रहल अछि
कानय जांत हकन्न ।।

ककरा के देखय आ बचबय
सबहक जान बलाय ।

खुट्टा पर बान्हल, कनैत छनि
गोनू झा के गाय ।।

-तारानन्द वियोगी

शब्दार्थः

हहारो	–	शोर, हल्ला
सबठां	–	सर्वत्र, सब जगह
टुक-टुक	–	एकटक
बलाय	–	आफत

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्नः**

कहू तऽ-

(1) बाढ़ि कोन मासमे अबैत अछि ?

(2) बाढ़ि ककरा नुकसान पहुँचबैत अछि ?

(3) बाढ़िक मुख्य कारण की थिक ?

(4) बाढ़ि अहाँकेँ नीक लगैत अछि की खराब ? अपन विचार लिखू ।

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) बाढ़ि अयला पर की होइत अछि ?

(2) बाढ़ि अयला पर सर्वत्र लोकक बीच की पसरि जाइत अछि ?

(3) 'चुल्हा टुक-टुक ताकि रहल अछि
कानय जांत हकन्न' कविताक एहि पाँतिक आशय लिखू ।

(4) बाढ़ि पर एकटा अनुच्छेद लिखू ।

(5) गोनू झा पर एक गोट अनुच्छेद लिखू ।

(ग) **सही-गलती:**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बाक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) बाढ़ि अयला पर सर्वत्र हरियरी पसरि जाइत अछि । ☐

(2) बाढ़िमे लोक खूब आनन्द मनबैत अछि । ☐

(3) माल-जालक लेल बाढ़ि कष्टकारक भऽ जाइछ । ☐

(4) बाढ़िक भयावह रूप देखि सभ डेरा जाइत अछि । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू:**

(1) चारूकात हहारो मचलै
सबठां पसरल ....

(2) चुल्हा .... ताकि रहल अछि
कानय जांत हकन्न ।

(3) ककरा के देखय ....
सबहक जान बलाय ।

(ङ) **निम्नलिखित शब्दकैं वाक्यमे प्रयोग करू:**

पानि, चारूकात, जांत, जान, खुट्टा ।

(च) **निम्नलिखित शब्दकैं शुद्ध करू:**

सोक, चुलहा, वलाए, खरीहान, अन ।

(छ) **निम्नलिखित शब्दक विपरीतार्थक शब्द लिखू:**

अतिवृष्टि, उज्जर, उजड़ल,
पसरल, कानब, बान्हल ।

अनुमान एवं कल्पनाः

सोचू, बाढ़ि सँ बचबाक हेतु कोन उपाय कयल जाय ।

भाषा अध्ययनः

(1) जखन कोनो वर्णक उच्चारण नाक आ मुँहसँ होइत अछि तऽ ओकरा ऊपर अनुस्वार या चन्द्रविंदु लगाओल जाइत अछि । जेना- कँ, सँ, पँ सं आदि । एहन अनुस्वार एवं चन्द्रविंदु युक्त दस गोट शब्दकँ ताकि कऽ ओकरा वाक्यमे प्रयोग करू ।

(2) नीचाँ देल गेल चौघरामे सात गोट नदीक नाम देल गेल अछि जाहिमेसँ प्रत्येक वर्णकँ ताकि कऽ तीन नदीक नाम लिखू-

गं	स्व	ल	ड़
मु	ती		न
स	शी	ती	
ला	क	म	गा
म	को	ग	
य	वा	ना	ला

अध्ययन संकेतः

शिक्षकसँ अपेक्षा जे विद्यार्थीकँ बाढ़िक सम्बन्धमे विस्तारसँ बताबथि वा वर्गमे चर्चा करथि ।

+++

12. कम्प्यूटर

विज्ञानक क्षेत्रमे आइ पूरा विश्व अप्रत्याशित ढंगे प्रगति कए रहल अछि । आजुक युगमे ओही देशकेँ धनिक बूझल जाइत अछि जे विज्ञानक क्षेत्रमे विकसित अछि आ गरीब ओकरा जे एहिमे पिछड़ल अछि । तेँ आजुक युगकेँ वैज्ञानिक युग कहल जाइत अछि । ताहूमे कम्प्यूटर एक महानतम उपलब्धि अछि । जीवनक कोनो एहन क्षेत्र नहि जतऽ कम्प्यूटरक प्रयोग नहि हो ।

प्रस्तुत पाठमे कम्प्यूटरक गुण आ ओकर लोकप्रियताक सम्बन्धमे कहल गेल अछि । कम्प्यूटरक विभिन्न भाग आ ओकर कार्य क्षेत्रसँ विद्यार्थीकेँ अवगत कराओल गेल अछि, संगहि इहो देखाओल गेल अछि जे ई हमरा सभक हेतु कोना वरदान सिद्ध भेल अछि ।

[कम्प्यूटरक चित्र]

आइ पूरा विश्वमे वैज्ञानिक प्रगति बड़ द्रुत गतिसँ भऽ रहल अछि । आइ भनसाघरसँ लऽ कऽ आकाश धरि विज्ञानक चमत्कार देखबामे अबैत अछि । वैज्ञानिक-प्रगतिक अद्‌भुत उदाहरण कम्प्यूटर थिक । सब तरहक गणना करबामे सक्षम यन्त्रकेँ कम्प्यूटर कहल जाइत छैक । आइ कम्प्यूटरक प्रयोग सर्वत्र भऽ रहल अछि । आइ प्रत्येक विद्यालय आ महाविद्यालयमे एकर पढाइ प्रारंभ भऽ चुकल अछि ।

की अहाँ जनैत छी जे एकर जन्मदाता किनका कहल जाइत अछि ? ब्रिटिश वैज्ञानिक

चार्ल्स बैबेज 1833 ई० मे एकर कल्पना कयलनि । आ ओही आधार पर बादमे कम्प्यूटरक विकास भेल । तेँ बैबेज केँ कम्प्यूटरक जन्मदाता कहल जाइत छनि । 1937 ई० मे हार्वर्ड विश्वविद्यालयक हार्वर्ड एकिनक नेतृत्वमे मार्क 1 कम्प्यूटरक निर्माण कयल गेल । सामान्यतः ई प्रथम कम्प्यूटर छल । 1946 ई० मे पेंसिलवेनिया विश्वविद्यालयमे प्रथम डिजिटल कम्प्यूटर बनाओल गेल जकर नाम छल इनियाक, एकर आकार पैघ छल आ ओजन छल 30 (तीस) टन । 1951 ई० मे प्रथम व्यावसायिक कम्प्यूटर बनाओल गेल । पूर्वमे कम्प्यूटर बहुत भारी आ पैघ आकारक होइत छल जे शीघ्र गर्म भऽ जाइत छल मुदा क्रमशः बादमे विभिन्न वैज्ञानिक लोकनिक प्रयाससँ एकर आकार छोट होइत गेल आ कार्यक्षमता सेहो बढ़ैत गेल ।

भारतमे कम्प्यूटरक सर्वप्रथम निर्माण 1966 ई० मे टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ फण्डामेंटल रिसर्च, मुम्बई मे भेल । कम्प्यूटरकेँ मोटा मोटी दू भागमे बाँटल जा सकैत अछि- हार्डवेयर आ सॉफ्टवेयर । साधारणतया जे आँखिसँ देखल जा सकैत अछि **हार्डवेयर** कहबैछ । जेना- कीबोर्ड, मॉनिटर, सी० पी० यू०, डिस्क ड्राइब प्रिंटर, माउस आदि ।

सॉफ्टवेयर - ई कम्प्यूटरक मुख्य भाग थिक । एहिसँ कम्प्यूटर संचालित होइत अछि । एकरा अन्तर्गत विभिन्न प्रकारक प्रोग्राम अबैत अछि जकर प्रयोग विश्लेषण, प्रोसेसिंग, स्मृति, डिस्प्ले आदि तरहक कार्यमे होइत अछि ।

एहिमे प्रयुक्त प्रमुख भाग अछि-

की बोर्ड - टाइपराइटर मशीनक 'की बोर्ड' जकाँ एकरो की बोर्ड होइत अछि ।

माउस - माउस इनपुट युक्ति होइछ। एहिमे दू या तीनटा बटन रहैत अछि जकर उपयोग क्लिक करबामे वा ड्रैग करबामे कयल जाइत अछि। माउसकेँ माउस पैड पर आगू-पाछू या चारूकात घुमाओल जाइत अछि जाहिसँ ई पता चलैत अछि जे स्क्रीन पर कोन कार्य भऽ रहल अछि ।

ट्रैक बॉल - ई एक स्थिर माउस युक्ति कहबैत अछि जाहिमे कर्सर (स्क्रीन पर तीरक निशान जकाँ) केँ एमहर-ओमहर घुमयबाक लेल एक बॉल लागल रहैत अछि जकरा (अंगूठा) हाथक औंठा सँ घुमाओल जाइत अछि ।

जॉय स्टिक - इहो एक माउस युक्ति अछि जाहिमे कर्सरक गति आ दिशा लीवरक सहायतासँ नियंत्रित कयल जाइछ ।

डिजिटिंग टैबलेट - इहो एक इनपुट युक्ति कहबैछ एहिसँ कम्प्यूटरमे ड्राइंग व स्केचकेँ प्रवेशित कयल जाइछ ।

स्कैनर - एहिसँ पुस्तककेँ पढ़ल जा सकैत अछि वा निशान आदिक पहचान कयल जा सकैत अछि ।

टच स्क्रीन - एहि स्क्रीन युक्त कम्प्यूटर पर सीधा हाथक आंगुरसँ कार्य कयल जा सकैत अछि । एहि लेल माउस इलेक्ट्रॉनिक पेनक आवश्यकता नहि पड़ैछ ।

लाइट पेन - ई माउस जकाँ कार्य करैत अछि ।

मॉनिटर - मॉनिटर आउटपुट युक्ति अछि जे देखबामे टेलीविजनक स्क्रीन जकाँ होइत अछि । एकर बनावट तेहन होइछ जे सभ अक्षर बहुत स्पष्ट देखाइ पड़ैत अछि। ई दू प्रकारक होइछ - मोनोक्रोम आ एकवर्णी वा रंगीन ।

प्रिंटर - प्रिंटर कम्प्यूटरक संग जोड़ल जायबला युक्ति अछि जाहिसँ स्क्रीन पर देल गेल सूचनाकेँ कागज पर मुद्रित कयल जाइत अछि ।

प्लाटर - एहि युक्तिक सहायतासँ कम्प्यूटर कमाण्ड द्वारा पेपर पर चित्र घीचल जा सकैत अछि ।

सी॰ पी॰ यू॰ - कम्प्यूटरक जे भाग प्रोग्रामक निर्देशकेँ क्रियान्वित करैत अछि- सी॰ पी॰ यू॰ कहबैत अछि । मानव शरीरमे जहिना मस्तिष्क होइत अछि तहिना कम्प्यूटरमे सी॰ पी॰ यू॰ । ई सभ कार्यकेँ शीघ्रतासँ करैत अछि । कम्प्यूटरक सभ अंग सी॰ पी॰ यू॰ क अनुसार कार्य करैत अछि । जाहि प्रणालीसँ ई नियोजित कयल जाइछ ओ ओपरेटिंग सिस्टम कहबैत अछि । एकर दू भाग होइत अछि-कंट्रोल यूनिट आ एरिथमेटिक लाजिक यूनिट- ए॰ एल॰ यू॰ ।

कम्प्यूटरक कार्यक्षमताक अनुसोरँ एकर आरो कतेक सूक्ष्म भाग होइछ । कम्प्यूटर सभ एकत्रित आँकड़ाक इलेक्ट्रानिक विश्लेषण प्रस्तुत करैछ । आइ शीर्षस्थ वैज्ञानिक लोकनिक द्वारा नव-नव प्रोग्राम विकसित कयल जा रहल अछि । आधुनिक कम्प्यूटर आ सुपर पावर कम्प्यूटर बहुत शक्तिशाली अछि जे कम समयमे अधिक आ जटिल कार्य करैत अछि । बड़का-बड़का कारखाना आ मीलमे सामग्रीक संख्या आ स्तरक निर्धारण कम्प्यूटर द्वारा कयल जाइत अछि । लाभ हानिक आँकड़ा, विभिन्न संस्था आ पैघ-पैघ नामी दोकानोमे कम्प्यूटरसँ बिल तैयार कयल जाइत अछि । अपराध नियंत्रण, अंतरिक्ष यात्राक निर्देशन आ निरीक्षण, ज्योतिषीय कार्य एवं ज्ञान,

भविष्यवाणी, रेलवे आ हवाइ जहाजमे आरक्षण टिकट, बैंकमे लेन-देनक हिसाब, आयात-निर्यात, प्रतिरक्षा, परमाणु उर्जा, विद्युत, राजस्व आ विभिन्न सरकारी कार्यालयमे फाइल आदिक हिसाब-किताब कम्प्यूटर द्वारा होमय लागल अछि । आइ कम्प्यूटरक प्रयोग तीव्र गतिएँ भऽ रहल अछि । तेँ एकर लोकप्रियता दिनानुदिन बढ़िये रहल अछि ।

-अभिषेक

शब्दार्थ:

आवागमन	-	आयब-जायब
औद्योगिक	-	उद्योगसँ सम्बन्धित
विश्लेषण	-	विस्तार, व्याख्या
जटिल	-	कठिन
धड़ल्लेसँ	-	खूब तेजीसँ
दुष्प्रभाव	-	खराब प्रभाव

प्रश्न ओ अभ्यास

बोध-विचार

(क) **मौखिक प्रश्न:**

कहू तऽ-

(1) बैंकमे कम्प्यूटरक की कार्य अछि ?

(2) व्यापारक क्षेत्रमे कम्प्यूटरसँ कोन कार्य होइछ ?

(3) रेलवे आ हवाइ जहाजमे कम्प्यूटरसँ कोन कार्य होइछ ?

(4) कम्प्यूटरमे प्रयुक्त ओकर भागक नाम बताउ ?

(5) कम्प्यूटरसँ की लाभ अछि ?

(ख) **लिखित प्रश्नः**

(1) कम्प्यूटरक जन्मदाता किनका कहल जाइत छनि ?

(2) प्रथम डिजिटल कम्प्यूटरक निर्माण कोन ई॰ मे भेल ?

(3) भारतमे कम्प्यूटरक निर्माण कहिया आ कतऽ भेल ?

(4) आकारक दृष्टिए पूर्वक कम्प्यूटर आ आजुक कम्प्यूटरमे की अन्तर अछि ?

(5) हार्डवेयर (कम्प्यूटरक) ककरा कहल जाइछ ?

(6) कम्प्यूटरमे माउसक की कार्य अछि ?

(7) कम्प्यूटरमे मॉनिटरक की कार्य अछि ?

(8) कम्प्यूटरमे सी॰ पी॰ यू॰ क कार्य लिखू ।

(9) प्रिटंरक की कार्य अछि ?

(ग) **सही-गलतीः**

नीचाँ कथनक आगाँ देल गेल बाकस (बॉक्स) मे सही (✓) आ गलतीक (×) चिह्न लगाउ-

(1) चार्ल्स बैबेज 1937 ई॰ मे कम्प्यूटरक निर्माण कयलनि । ☐

(2) 1951 ई॰ मे प्रथम व्यावसायिक कम्प्यूटर बनाओल गेल । ☐

(3) 1933 ई॰ मे डिजिटल कम्प्यूटरक निर्माण भेल । ☐

(4) भारतमे 1966 मे कम्प्यूटरक निर्माण भेल । ☐

(5) पूर्वमे कम्प्यूटरक आकार पैघ होइत छल । ☐

(घ) **रिक्त स्थानक पूर्त्ति करूः**

(1) कम्प्यूटर, सभ एकत्रित आँकड़ाक इलेक्ट्रॉनिक .... प्रस्तुत करैछ ।

(2) विज्ञानक आश्चर्यजनक आविष्कार आइ मानव संस्कृतिकेँ .... कऽ चुकल अछि ।

(3) कम्प्यूटरक प्रयोग जीवनक .... क्षेत्रमे भऽ रहल अछि ।

(4) कम्प्यूटरकेँ मोटा-मोटी .... भाग मे बाँटल जा सकैत अछि ।

(5) 21 वीं सदीकेँ .... युग कहएबा लेल दृढ़ संकल्पित अछि ।

(ङ) नीचाँ देल गेल शब्दकेँ वाक्यमे प्रयोग करू:

(1) कम्प्यूटर (2) वरदान (3) बैंक (4) संस्कृति (5) सुविधा ।

(च) निम्नलिखित शब्दकेँ शुद्ध करू:

(1) कम्पुटर (2) कांन्ती (3) सेफ्टवेयर ।

अनुमान आ कल्पना:

अहाँ मोबाइल देखने हैब । एकर प्रयोगो कयने हैब । सुनला आ देखलाक आधार पर 'मोबाइलक' वर्णन करू ।

भाषा अध्ययन:

(1) जे कार्यक निष्पादन करय से कर्त्ता कारक कहबैछ । जेना- राम परीक्षा देलनि । एहिठाम 'राम' कर्त्ता कारक छथि । पाठसँ कर्त्ता कारक ताकि कऽ लिखू ।

(2) पाठसँ योजक चिह्न (-) बला शब्द युग्मकेँ ताकि कऽ लिखू-
जेना- पढ़ब-लिखब, मिलल-जुलल ।

योग्यता विस्तार:

(1) कम्प्यूटरक चित्र बनाकऽ ओकर प्रमुख भागक नाम लिखू ।

(2) कम्प्यूटर पर एक अनुच्छेद लिखू ।

अध्यापन संकेत:

शिक्षकसँ अपेक्षा जे विद्यार्थीकेँ कम्प्यूटरक प्रयोगक सम्बन्धमे विस्तारसँ बताबथि ।

✦✦✦

13. 'चल चल दइया मिथिला चल'

चल लच दइया मिथिला चल
सोन्हगर आंगन सोन्हगर घर
हम छोट तों ही नमहर,
ताकि देबौ रामे सन वर ।
रहतौ माथ पर बाबाक छाहरि
चैत मे देखबें हरियर राहड़ि
मिथिलाक उपमा नहि दोसर
पार्वती संग छथि शंकर .....
पोखरीक भीर पर केराक बोन
खइहें जामुन आम भरि मोन
सुनिहें अप्पन भूमिक स्वर
झूलिहें झूला नै कर डर
पीपरक गाछ तर ब्रह्मस्थान
देखितहिं सभ करत सम्मान
आइरो धूर पर खड़ कोमल
हरियर हरियर चर चांचर
कचरी मुरही आर चुरलाई
धोकरी भरि भरि देतौ दाइ
घरहिं लग लीची कटहर
अपनहि गाछ मे छइ बड़हर

काका आम लताम खुएतौ
भैया कोरा कांख घूमेतौ
बाट-घाट दुलारक स्वर
कहतौ सभ बौआ सुन्दर
गबिहें चैती गीत मल्हार
काकी सभक पाबि दुलार
सजमनि खीरा संग कुमहर
फड़ल छइ अपनहिं घर पर
मिथिलाक परिचय पान मखान
सरिसो बथुआ सभ रंग धान
अपन भूमि सभ सँ ऊपर
दोसर सभटा लगै झड़ .....
तरूआ भांटा संग तिलकोर
पापड़ कुड़कुड़ तरल परोर
देखिहें कोबरक बिहुँसैत वर
कनियां बांटथि अहिबफड़ ...
माछक मूड़ा माछक झोर
कोयल गाबय निशिदिन भोर
ताकि देबौ रामे सन वर
चल चल दइया मिथिला चल

-महाकान्त ठाकुर

14. बिलाड़िक काटल बाट

इजोरिया रातिमे निर्जन स्थानपर ओ कार ठाढ़ छलै । गाम ओहि स्थलसँ पाछाँ सेहो एक किलोमीटर आ आगाँ सेहो करीब एक किलोमीटर छलैक । ओ युवक गाड़ीमेसँ बाहर निकलि जेना ककरो अयबाक बाट तकैत छल। खन ओ युवक टहल' लगैत छल त' खने कारक गेटमे ओंगठिक' ठाढ़ भ' जाइत छल । रातुक साढ़े नौ दस बजैत छलै । एतेक राति आ बीच सड़क पर गाड़ी ठाढ़ अछि ! एकटा युवक टहलि रहल अछि ! अवस्से ओ युवक लुटेरा अछि जे आगाँ वा पाछाँसँ आबयबला यात्रीक बाट तकैत अछि । शहर दिससँ जे घुमैत छल ओ दूरेसँ निर्जन स्थानपर ठाढ़ गाड़ीकेँ देखि ठमकि जाइत छल । करीब आधा घंटा बीत गेल हेतै । सब आब बला डेराक' पाछाँ घुमि जाइत छल । जे घुमिक' गाम दिस आपस जाइत छल ओ चौकपर जाक' चर्चा करैत छल । चौकपर एक्का-दोक्का दोकान खुजल रहि गेल छलै । जे बजार दिससँ घुमै ओकरा सब चौके पर रोकि क' सूचना द' दैत छलै । आखिर दस बीस गोटाक जुटान भ' गेलै । सबकियो हिम्मत जुटौलक आ लाठी, रोड़ा, पाथर ल' आगाँ मुँह विदा भेल । ठहाठही इजोरिया छलैके । दूरेसँ साफ देखबामे अबैत छलै ओ कार आ टहलैत युवक । जाबत आगाँसँ ई व्यक्ति सब ओहि कारक नजदीक पहुँचय-पहुँचय ताबत पाछाँसँ एकटा साइकिल बला पार क' गेलै । बस ओ युवक कारमे चढ़ल आ गाड़ी स्टार्ट क' लेलक । ओ जँ गाड़ी बढ़ौलक कि आगाँसँ अबैत भीड़ ओकरा गाड़ीकेँ घेरि लेलकै । गाड़ी रूकल । गेट खोलि ओहि युवककेँ घिचलक सब ।

ओ युवक जाबत पुछितए जे की बात छै ? ताबत त' हाथे-मुक्के पाँच सात चाट बरसि गेलै ।

ओ युवक कनैत बाजल-''हमरा किएक मारै छी, हम अहाँसबकेँ की बिगाडलौंहें ?'' एकटा व्यक्ति उत्तर देलक-''की बिगाड़लौंहें ? एखने बुझा दै छियह जे केहन होइछै बटमारि ! देखहक ने !

फेर घिच्चातिरीं शुरू भ' गेल । एतेक रातिमे ओहि युवकक बात सुननिहार कियो नहि छलैक । ओ कारबला युवक कतेको घुस्सा आ लात खयलक । ओ जँ किछु बजबाक हेतु मुँह खोलैत छल कि भीड़क लोक ओकरापर झपटि खसैत छल । '' डकुबा नहितन ! आइये कोनो

बटोही असगर-दोसगर भेटि जैतै कि ओकर पैसा-कौड़ी छिनि लितै आ ऊपरसँ जानो ल' लितै । ...मार चंडलबाकें !" समूचा भीड़ कहकह करैत छल । ओ युवक मारिसँ अधमरू सन भ' गेल । सड़क पर खसि पड़ल । बेराबेरी सब ओकरा हिला-डोलाक' देखैत छलैक । अनठेने छह ! एहन लोक अहिना भग्गल करैत छै ! .....उठा क' गामे दिस ल' चलह ! भोरमे पुलिसके बजाएल जेतै !" -एकटा व्यक्ति अपन विचार देलक । दोसर अधबयसू बाजि उठल- "आ एकर गाड़ीकें की करबहक ? ......ककरो चलाब' अबैए कार ?"

सब एक दोसराक मुँह तकैत रहि गेल । ......आब ओ युवककेँ कने-कने होश भ' रहल छलै । मुँह बबैत जेना किछु बाज चाहैत छल । ......युवक धीरे-धीरे आँखि खोललक । आगाँ-पाछाँ ठाढ़ भीड़केँ देखि ओ फेर डेरा गेल । ओ युवक करूण स्वरेँ बाजि उठल- "हम चोर-डाकू नहि छी !"

एकटा व्यक्ति झपटैत बाजल-"इह बात कोना बनबैए ? ......चोर-डाकू नहि छी त' महात्मा छी ? ......एतय एत्ती रातिक' ध्यान, तपस्या करैत छलौंहें ?"

सब व्यक्तिकेँ हँसी लागि गेलै ।

"नहि, हम त' .....! "ओ युवक उत्तर देबाक प्रयास कयलक कि दोसर व्यक्ति उपरेसँ बातकेँ लोकि लेलक ।

"तखन हमरा सबकेँ देखिक' पड़ाएल किएक जाइत छलह । रहितह किने निडर जकाँ ।" ओ युवक फेर जवाब देबाक लेल मुँह खोललक । दोसर व्यक्ति बाजि उठल-"हइ एकरा बातपर की विश्वास करै जेबह । .....चोर-चुहाड़ अहिना भूत जकाँ बीसटा डाढ़ि-पात पकड़ै छै ।" "तकै की छी ! आब त' ई अपनेसँ गाड़ी चलाक' ल' जाएत । ....चलू ने, गाममे बान्हि क' घरमे ताला मारि देबै ! .....भोरे जखने पुलिस दस डंटा लगौतै कि अपने भूत जकाँ बकबक ब'क' लगतै ।"

ओ युवक क'ल जोड़ि विनती कर' लागल-"कनी हमर बात सुनि लिअ ! नहि विश्वास हएत त' हमरा क' देब पुलिसक हवाला ।"

"की सुनतह तोहर बात ! तोहर बात त' बुझले छै ! तोँ कहबहक जे हम ओहिना ठाढ़ छलौंहें ।" भीड़मेसँ कियो बाजि उठल-"इजोरिया रातुक आनन्द लै छलौंहें ।"

अबाज आयल-''से धरि इजोरिया जोगर भेटि गेलनि .....की यौ ?''

भभाक' हंस' लागल ।

युवक अपन सफाइ देबाक प्रयास कयलक-''....बिलाड़ि बाट काटि देलक ! तेँ ठाढ़ भ' गेल छलौं ।''

भीड़मेसँ कियो पुछलक-''त' एतेक काल किएक ठाढ़ छलौंहें ! .....आ हमरा सबके देखिते पड़ाए किएक लगलौं ?''

''अहाँसब जखने आयलहुँ तखने एकटा व्यक्ति सड़क पार क' गेलै । हम तेँ गाड़ी बढ़ाब' लगलहुँ ।''

कियो कहैत छलै जे ई भूठ बजैए । कियो कहै भइयो सकैए । ककरो कहब छलै- ''जाह रे अंध विश्वासी ! चढ़ै छह कार पर आ अंधविश्वास छह गछाड़ने मुर्खोसँ बेसी ।'' ककरो कहब छलै-बाट कटलकै बिलाड़ि आ देह तोड़ेलक ई गदहा जकाँ ।

सब व्यक्ति आपसमे विचार-विमर्श कयलक । अन्तमे निर्णय भेलै जे जाए देल जाए ! ककरो किछु बिगाड़बो त' नहिए केलकैए । .....कहीं सत्ते कहैत हुअए । भीड़मेसँ एकटा व्यक्ति बाजल- ''जाह ! माए खरजितिया केने छलह तेँ बँचि गेलह । ......एनामे त' नाहक जान चलि जइतह ।''

सब गौंवाँ गामदिस घुमि गेल । बटोही सब आगाँ मुँह बढ़ल । ओ युवक कारमे बैसिक' गाड़ी स्टार्ट कयलक । ओ सोचैत छल एहन अंधविश्वासमे बेकार पड़लौं । ई त' उनटे भ' गेल । बिलाड़िक काटल बाटपर गेल रहितहुँ त' केहन सनगर जतरा रहितय ।

-ऋषि वशिष्ठ

✦✦✦